CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2017 with Solution PDF-Set 2/1/1 - Compartment

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 6, 7, 8 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

भारत का हृदय गाँवों में बसता है। यहीं पर सेवा और परिश्रम के अवतार किसान रहते हैं, जो हम सब के अन्नदाता और सम्पूर्ण सृष्टि के पालक हैं। किसान का नाम आते ही हमारी आँखों के सामने एक ऐसे असहाय और दयनीय व्यक्ति की छबि घूमने लगती है जिसकी आँखों में निराशा का अँधेरा दिखाई देता है किन्तु होता है वह परिश्रमी एवं स्वाभिमानी व्यक्तित्व का धनी व्यक्ति। उसकी दुरवस्था के लिए वह खुद भी जिम्मेदार है जिसके अनेक कारण हैं। अशिक्षा के कारण वह न तो अपने अधिकारों की ओर जागरूक है और न वर्तमान तकनीकी विकास की ओर ही उसका ध्यान जा पाता है। परिणामतः उसकी पैदावार प्रभावित होती है और उसे अपने उत्पादन का उचित मूल्य भी नहीं मिल पाता। अत्यन्त अल्पमूल्य में वह अपना बहुमूल्य परिश्रम साहूकार अथवा सरकार के हाथ सौंप देता है और वह सदैव फटेहाल ही रह जाता है।

इसके साथ-साथ किसानों के किसी संगठन का अभाव भी उसके विकास में सबसे बड़ा बाधक है। वह अपने खून-पसीने की गाढ़ी कमाई को आपसी झगड़े-झंझट की बलि चढ़ा देता है। दादा की पुश्तैनी रंजिश पोते तक और उससे आगे तक चलती रहती है। फलतः कोर्ट-कचहरी उसके परिश्रम को खा जाती हैं। इन सबके साथ-साथ सरकारी योजनाओं के केन्द्र प्रायः नगर ही रहते हैं। जहाँ से किसान का कोसों दूर तक कोई सम्बन्ध नहीं रहता। फलतः कुछ मुट्ठी भर लोग ही उसका लाभ उठाते रहते हैं और वह दीन-हीन किसान अपनी दुरवस्था पर आँसू बहाता रहता है। इन सबके अतिरिक्त अंधविश्वासी परम्परावादी होना भी उसके लिए अभिशाप होता है।

पूँजी का अभाव किसान की सनातन समस्या है। बीज, खाद, उपकरण खरीदने की क्षमता प्रायः उसके पास नहीं होती और वह या तो साहूकार की ओर मुँह करता है या बैंकों की ओर। फँसता वह दोनों ओर है। यदि किन्हीं प्राकृतिक या मानवी कारणों से फसल मारी गई तो ऋण-वसूली में न साहूकार दया करता है, न बैंक। उसका आधार नहीं रहता, उसके पैरों तले की ज़मीन खिसक जाती है और उबरने का कोई रास्ता न देखकर वह आत्महत्या करने को विवश हो जाता है। 'ग्रामदेवता', 'अन्नदाता' जैसे विशेषण उसकी हँसी उड़ाते हैं। [15 अंक]

1(क). अशिक्षित होने से किसान को क्या-क्या हानियाँ होती दिखाई पड़ती हैं? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में अशिक्षा को किसान की दुर्दशा का प्रमुख कारण बताया गया है। उत्तर में शिक्षा के अभाव और उससे होने वाली आर्थिक हानि का संबंध स्पष्ट करना आवश्यक है।
- किसान के अधिकारों की जानकारी और आधुनिक तकनीक की समझ, दोनों उसके उत्पादन तथा आय को प्रभावित करती हैं।

चरण 1: अधिकारों और तकनीक की जानकारी का अभाव अशिक्षित होने के कारण किसान अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं हो पाता। साथ ही उसका ध्यान वर्तमान तकनीकी विकास की ओर नहीं जाता, इसलिए वह खेती में नए साधनों और बेहतर तरीकों से लाभ नहीं उठा पाता।

चरण 2: आर्थिक हानियाँ आधुनिक तकनीक से दूर रहने पर उसकी पैदावार प्रभावित होती है। अपने अधिकारों के प्रति अनभिज्ञ रहने के कारण उसे उपज का उचित मूल्य भी नहीं मिलता। वह अपना बहुमूल्य श्रम बहुत कम मूल्य पर साहूकार अथवा सरकार के हाथ सौंप देता है और फटेहाल बना रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष अशिक्षा किसान को अधिकारों और आधुनिक तकनीक की जानकारी से वंचित रखती है; इससे पैदावार तथा आय प्रभावित होती हैं और उसे अपनी उपज का उचित मूल्य नहीं मिल पाता।

त्वरित सुझाव: अशिक्षा से अधिकारों और तकनीक का ज्ञान घटता है; इन्हें कम पैदावार और उचित मूल्य न मिलने की हानियों से जोड़ें।

1(ख). किसान के मार्ग की दो कठिनाइयों का विवेचन कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में दो कठिनाइयों का विवेचन माँगा गया है, इसलिए प्रत्येक कठिनाई के साथ उसका परिणाम भी बताना चाहिए।
- उत्तर गद्यांश में दिए गए संगठन के अभाव और पूँजी के अभाव पर आधारित है।

चरण 1: संगठन का अभाव किसानों का कोई प्रभावी संगठन न होना उनके विकास में बड़ा बाधक है। एकजुट होने के स्थान पर वे आपसी झगड़ों और पुरानी रंजिशों में उलझ जाते हैं। उनकी मेहनत की कमाई कोर्ट-कचहरी में खर्च हो जाती है तथा अपनी दशा सुधारने की सामूहिक शक्ति विकसित नहीं हो पाती।

चरण 2: पूँजी का अभाव बीज, खाद और उपकरण खरीदने के लिए किसान के पास पर्याप्त धन नहीं होता। उसे साहूकार या बैंक से ऋण लेना पड़ता है। यदि फसल नष्ट हो जाए, तो भी ऋण-वसूली नहीं रुकती। इस प्रकार धन की कमी उसे कर्ज और आर्थिक असुरक्षा के चक्र में फँसा देती है।

चरण 3: निष्कर्ष किसान की दो प्रमुख कठिनाइयाँ संगठन का अभाव और पूँजी की कमी हैं। पहली उसे बिखेरकर उसकी कमाई नष्ट करती है और दूसरी उसे ऋण पर निर्भर बनाती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर लिखने से पहले प्रश्न के मुख्य शब्द पहचानें और गद्यांश के उसी प्रसंग से कारण तथा परिणाम जोड़कर लिखें।

1(ग). पुश्तैनी रंजिश का क्या तात्पर्य है? इसका दुष्परिणाम लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शब्द का अर्थ उसके प्रसंग से ग्रहण करना चाहिए। यहाँ दादा से पोते तक चलने वाली दुश्मनी को पुश्तैनी रंजिश कहा गया है।
- दुष्परिणाम बताते समय पुरानी शत्रुता से मुकदमेबाजी और आर्थिक हानि तक का संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: पुश्तैनी रंजिश का अर्थ पुश्तैनी रंजिश का तात्पर्य पूर्वजों के समय से चली आ रही शत्रुता या मनमुटाव से है। एक पीढ़ी का झगड़ा समाप्त होने के बजाय अगली पीढ़ियों तक पहुँचता रहता है। गद्यांश में दादा की रंजिश पोते तक और उससे भी आगे चलने की बात इसी अर्थ को व्यक्त करती है।

चरण 2: इसका दुष्परिणाम ऐसी दुश्मनी के कारण किसान आपसी झगड़े और मुकदमेबाजी में उलझा रहता है। उसके खून-पसीने की गाढ़ी कमाई कोर्ट-कचहरी में खर्च हो जाती है। जो धन खेती और परिवार की उन्नति में लग सकता था, वह विवादों की भेंट चढ़ जाता है और किसान की दुर्दशा बनी रहती है।

चरण 3: निष्कर्ष पुश्तैनी रंजिश पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलने वाली शत्रुता है। इसके कारण किसान झगड़ों और मुकदमों में अपनी मेहनत की कमाई गँवा देता है।

त्वरित सुझाव: पुश्तैनी को पीढ़ियों से और रंजिश को दुश्मनी से जोड़ें; फिर मुकदमेबाजी में कमाई नष्ट होने का परिणाम लिखें।

1(घ). 'किसान की सनातन समस्या' क्या मानी गई है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सनातन समस्या का आशय लंबे समय से बनी हुई समस्या है। गद्यांश में पूँजी की कमी को यह संज्ञा दी गई है।
- कारण समझाने के लिए खेती के साधनों की खरीद और ऋण पर निर्भरता का उल्लेख आवश्यक है।

चरण 1: समस्या की पहचान गद्यांश के अनुसार पूँजी का अभाव किसान की सनातन समस्या है। किसान के पास खेती आरंभ करने और उसे सुचारु रूप से चलाने के लिए पर्याप्त धन नहीं होता। इसलिए परिश्रमी होने पर भी वह केवल अपने बल पर आवश्यक कृषि-साधन नहीं जुटा पाता।

चरण 2: यह समस्या क्यों बनी रहती है बीज, खाद और उपकरण खरीदने की क्षमता प्रायः उसके पास नहीं होती। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वह साहूकार अथवा बैंक का सहारा लेता है। फसल नष्ट हो जाने पर भी ऋण-वसूली होती रहती है, जिससे उसकी आर्थिक

कठिनाई और बढ़ती है। धन की यही निरंतर कमी उसे बार-बार ऋण लेने के लिए विवश करती है।

चरण 3: निष्कर्ष पूँजी का अभाव किसान की सनातन समस्या माना गया है, क्योंकि वह बीज, खाद और उपकरण खरीदने में असमर्थ रहता है तथा इनके लिए लगातार ऋण पर निर्भर होता है।

त्वरित सुझाव: सनातन समस्या के उत्तर में पूँजी का अभाव पहचानें और कारण में बीज, खाद, उपकरण तथा ऋण की आवश्यकता जोड़ें।

1(ङ). "फँसता वह दोनों ओर है।" कैसे? समझाइए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दोनों ओर से आशय साहूकार और बैंक से है; वाक्य का अर्थ इसी पूर्ववर्ती प्रसंग से स्पष्ट होता है।
- समझाने के लिए ऋण लेने की विवशता और फसल नष्ट होने पर भी ऋण-वसूली जारी रहने का संबंध बताना चाहिए।

चरण 1: ऋण लेने की विवशता किसान के पास बीज, खाद और उपकरण खरीदने के लिए पूँजी नहीं होती। खेती करने के लिए वह साहूकार से ऋण लेता है या बैंक की ओर जाता है। इस प्रकार अपनी बुनियादी कृषि-आवश्यकताओं के लिए भी उसे किसी ऋणदाता पर निर्भर होना पड़ता है।

चरण 2: दोनों ओर फँसने का अर्थ यदि प्राकृतिक या मानवीय कारणों से फसल नष्ट हो जाती है, तो किसान की आय का आधार समाप्त हो जाता है। फिर भी ऋण-वसूली के समय न साहूकार दया करता है, न बैंक। अतः किसी भी ओर से लिया गया कर्ज संकट के समय उसके लिए बोझ बन जाता है और उसे राहत का रास्ता दिखाई नहीं देता।

चरण 3: निष्कर्ष किसान साहूकार और बैंक, दोनों से ऋण लेने पर फँसता है, क्योंकि फसल नष्ट होने और आय समाप्त हो जाने पर भी दोनों उससे ऋण-वसूली करते हैं।

त्वरित सुझाव: दोनों ओर का संकेत साहूकार और बैंक की ओर है; फसल नष्ट होने पर भी दोनों की ऋण-वसूली जारी रहने की समानता लिखें।

1(च). किसानों के द्वारा आत्महत्या का मुख्य कारण क्या होता है? उससे छुटकारा आपके विचार से कैसे संभव है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का पहला भाग गद्यांश के कारण-परिणाम पर आधारित है और दूसरा भाग उसी समस्या के समाधान पर विचार माँगता है।
- सुझावों का संबंध ऋण, फसल की क्षति और पूँजी की कमी से होना चाहिए।

चरण 1: मुख्य कारण फसल नष्ट होने के बाद किसान की आय का आधार समाप्त हो जाता है, किंतु साहूकार और बैंक ऋण-वसूली में दया नहीं करते। ऋण चुकाने तथा आजीविका चलाने का रास्ता न देखकर वह गहरी निराशा में डूब जाता है। इसी आर्थिक संकट और उससे उबरने की आशा न रहने के कारण वह आत्महत्या के लिए विवश होता है।

चरण 2: छुटकारे के उपाय मेरे विचार से फसल नष्ट होने की स्थिति में किसान को तत्काल आर्थिक सहायता तथा ऋण-वसूली में राहत मिलनी चाहिए। बीज, खाद और उपकरण के लिए सुलभ सहायता तथा उपज का उचित मूल्य भी आवश्यक है। किसानों का संगठन और योजनाओं का लाभ सीधे गाँवों तक पहुँचाना उन्हें संकट से उबार सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष आत्महत्या का मुख्य कारण फसल की हानि के बाद ऋण का बोझ और निराशा है। समय पर आर्थिक सहायता, ऋण में राहत और उपज का उचित मूल्य देकर इस संकट से छुटकारा दिलाया जा सकता है।

त्वरित सुझाव: कारण में फसल की हानि और ऋण का बोझ लिखें; उपाय में इन्हीं समस्याओं के लिए आर्थिक सहायता और ऋण में राहत सुझाएँ।

1(छ). गद्यांश से दो मुहावरे चुनकर उनका प्रयोग अपने वाक्यों में कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुहावरा ऐसा स्थिर पदबंध है जिसका अर्थ उसके शब्दों के सामान्य अर्थ से अलग होता है। चयन गद्यांश में प्रयुक्त पदबंधों से करना है।
- अपने वाक्य में मुहावरे का प्रयोग ऐसा होना चाहिए कि उसका भावार्थ स्पष्ट हो और वाक्य स्वाभाविक लगे।

चरण 1: मुँह करना मुहावरा: 'मुँह करना'। अर्थ: सहायता या सहारे के लिए किसी की ओर जाना। गद्यांश में किसान पूँजी की कमी के कारण साहूकार या बैंक की ओर मुँह करता है। अपना वाक्य: पढ़ाई का खर्च जुटाने के लिए जरूरत पड़ने पर रमेश ने अपने बड़े भाई की ओर मुँह किया।

चरण 2: पैरों तले की ज़मीन खिसक जाना मुहावरा: 'पैरों तले की ज़मीन खिसक जाना'। अर्थ: अचानक बड़ा संकट आने से सहारा छिन जाना अथवा अत्यंत घबरा जाना। अपना वाक्य: आग में अपनी दुकान पूरी तरह जल जाने का समाचार सुनकर दुकानदार के पैरों तले की ज़मीन खिसक गई। यह प्रयोग अचानक आई विपत्ति और असहायता को स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष दो मुहावरे हैं—'मुँह करना' और 'पैरों तले की ज़मीन खिसक जाना'। ऊपर दिए गए स्वतंत्र वाक्यों में इनके क्रमशः सहारा लेने और संकट से असहाय हो जाने के अर्थ स्पष्ट हैं।

त्वरित सुझाव: दोनों चुने मुहावरों के स्वतंत्र वाक्य बनाएँ; एक में सहायता माँगने और दूसरे में अचानक संकट से सहारा छिनने का भाव स्पष्ट करें।

1(ज). गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक में पूरे गद्यांश का केंद्रीय विषय संक्षेप में आना चाहिए।
- उत्तर का आधार केवल प्रस्तुत गद्यांश अथवा काव्यांश की सूचना और उसका केंद्रीय विचार है।

चरण 1: गद्यांश का मुख्य विषय पहचानना गद्यांश में किसान के परिश्रम और उसके अन्नदाता होने के साथ उसकी आर्थिक तथा सामाजिक कठिनाइयों का वर्णन है। अशिक्षा, संगठन का अभाव, आपसी रंजिश, पूँजी की कमी और ऋण का दबाव उसकी दुर्दशा के कारण बताए गए हैं।

चरण 2: शीर्षक की उपयुक्तता जाँचना केवल खेती या गाँव शीर्षक रखने से किसान की समस्याओं पर दिया गया मुख्य बल स्पष्ट नहीं होगा। ऐसा शीर्षक उपयुक्त है जिसमें किसान भी आए और उसकी दयनीय स्थिति भी व्यक्त हो।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है—भारतीय किसान की दुर्दशा।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय किसी एक उदाहरण के बजाय सभी अनुच्छेदों को जोड़ने वाला मुख्य विचार पकड़िए।

2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

पग-पग पर चौराहे मिलते हैं,
बाँहें फैलाए रोज़ मिलती हैं सौ राहें,
शाखा-प्रशाखाएँ निकलती रहती हैं,
नव-नवीन रूप-दृश्य वाले सौ-सौ विषय
रोज-रोज मिलते हैं .....
और, मैं सोच रहा हूँ कि
जीवन में आज के
लेखक की कठिनाई यह नहीं कि
कमी है विषयों की
वरन् यह है कि आधिक्य उनका ही
उसको सताता है,
और, वह ठीक चुनाव नहीं कर पाता है। [5 अंक]

2(क). कैसे कह सकते हैं कि यह काव्यांश किसी भी लेखक की समस्या से संबंधित है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश का कथ्य उसकी स्पष्ट कथन वाली पंक्तियों से पहचानना चाहिए।
- उत्तर का आधार केवल प्रस्तुत गद्यांश अथवा काव्यांश की सूचना और उसका केंद्रीय विचार है।

चरण 1: लेखक से संबंध पहचानना कवि ने सीधे आज के लेखक की कठिनाई का उल्लेख किया है। उसके सामने रोज नए रूपों और दृश्यों वाले अनेक विषय आते हैं, इसलिए यह प्रसंग लेखन के लिए विषय चुनने से जुड़ा है।

चरण 2: सामान्य समस्या स्पष्ट करना काव्यांश में किसी एक लेखक या किसी एक रचना का नाम नहीं है। विषयों की बहुलता के बीच ठीक चुनाव न कर पाने की कठिनाई लेखक मात्र की समस्या के रूप में प्रस्तुत हुई है।

चरण 3: निष्कर्ष यह काव्यांश किसी भी लेखक की समस्या से संबंधित है, क्योंकि इसमें अनेक उपलब्ध विषयों में से लेखन के लिए उचित विषय चुनने की कठिनाई बताई गई है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में लेखक की कठिनाई बताने वाली अंतिम पंक्तियों को आधार बनाइए; केवल चौराहों का वर्णन मत कीजिए।

2(ख). समस्या की विकरालता को कवि ने किस रूप में देखा है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि के बिंब किसी समस्या की व्यापकता और उसके मानसिक प्रभाव को व्यक्त करते हैं।
- उत्तर का आधार केवल प्रस्तुत गद्यांश अथवा काव्यांश की सूचना और उसका केंद्रीय विचार है।

चरण 1: बिंबों को पहचानना कवि को पग-पग पर चौराहे मिलते हैं और प्रतिदिन सौ राहें बाँहें फैलाए दिखाई देती हैं। शाखाओं से प्रशाखाएँ निकलती रहती हैं तथा रोज नए रूप-दृश्य वाले अनेक विषय सामने आते हैं।

चरण 2: समस्या का प्रभाव समझना इतने अधिक और निरंतर बढ़ते विकल्प लेखक को उलझा देते हैं। कठिनाई विषयों की कमी नहीं, उनकी ऐसी अधिकता है जिसमें सही विषय चुनना कठिन हो जाता है। यही समस्या की विकरालता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने समस्या की विकरालता को हर कदम पर मिलने वाले चौराहों, सौ-सौ राहों तथा निरंतर फैलती शाखाओं-

प्रशाखाओं के रूप में देखा है। ये विषयों की अत्यधिक बहुलता के बिंब हैं।

त्वरित सुझाव: विकरालता पूछे जाने पर अधिकता दिखाने वाले बिंब और उनसे पैदा हुई चुनाव की कठिनाई साथ लिखिए।

2(ग). शाखाएँ-प्रशाखाएँ से कवि का क्या आशय है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतीक का अर्थ काव्यांश के केंद्रीय प्रसंग से जोड़ा जाता है।
- उत्तर का आधार केवल प्रस्तुत गद्यांश अथवा काव्यांश की सूचना और उसका केंद्रीय विचार है।

चरण 1: शब्दों का सामान्य अर्थ समझना वृक्ष की एक शाखा से कई छोटी प्रशाखाएँ निकलती हैं और उनका विस्तार होता जाता है। इस बिंब में एक से अनेक दिशाएँ निकलने का भाव है। कवि ने इसी विस्तार को लेखन के विषयों से जोड़ा है।

चरण 2: प्रसंगानुसार आशय निकालना लेखक को एक विषय पर विचार करते हुए उससे जुड़े कई नए विषय और विचार सूझते हैं। इस प्रकार विषयों का फैलाव लगातार बढ़ता जाता है और उसके सामने चुनने के लिए अनेक संभावनाएँ उपस्थित हो जाती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष शाखाएँ-प्रशाखाएँ से आशय एक विषय से निकलने वाले अनेक नए विषयों, विचारों और लेखन की संभावनाओं से है।

त्वरित सुझाव: प्रतीक का उत्तर लिखते समय वृक्ष का शाब्दिक वर्णन करके न रुकें; उसे लेखक के विषय-चयन से जोड़िए।

2(घ). "पग-पग चौराहे मिलते हैं बाँहें फैलाए" का भाव स्पष्ट कीजिए [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भावार्थ में बिंब के पीछे छिपा प्रसंगानुकूल विचार सरल भाषा में स्पष्ट किया जाता है।
- उत्तर का आधार केवल प्रस्तुत गद्यांश अथवा काव्यांश की सूचना और उसका केंद्रीय विचार है।

चरण 1: चौराहे और राहों का संकेत समझना चौराहे पर कई रास्ते मिलते हैं और यात्री को उनमें से एक रास्ता चुनना पड़ता है। काव्यांश में ऐसे चौराहे जीवन और लेखन के सामने उपस्थित अनेक विकल्पों का संकेत हैं।

चरण 2: आकर्षण और दुविधा स्पष्ट करना बाँहें फैलाने का अर्थ है कि अनेक नए विषय लेखक को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। हर कदम पर नए विकल्प मिलने से वह दुविधा में पड़ जाता है कि किस विषय को अपने लेखन के लिए चुने।

चरण 3: निष्कर्ष इन पंक्तियों का भाव है कि लेखक के सामने कदम-कदम पर अनेक आकर्षक विषय और संभावनाएँ आती हैं। वे उसे अपनी ओर बुलाती हैं, जिससे उचित विषय चुनना कठिन हो जाता है।

त्वरित सुझाव: चौराहे को विकल्प और बाँहें फैलाने को आकर्षण से जोड़कर भावार्थ लिखिए; यात्रा का वास्तविक वर्णन न बनाइए।

2(ङ). लेखक विषय का चुनाव ठीक से क्यों नहीं कर पाता? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कारण पूछने पर काव्यांश में दिए गए कारण और उसके परिणाम का सीधा संबंध स्पष्ट करें।

- उत्तर का आधार केवल प्रस्तुत गद्यांश अथवा काव्यांश की सूचना और उसका केंद्रीय विचार है।

चरण 1: वास्तविक कारण पहचानना कवि स्पष्ट करता है कि लेखक की समस्या विषयों की कमी नहीं है। उसे प्रतिदिन नए रूप-दृश्य वाले अनेक विषय मिलते हैं और एक से कई नई दिशाएँ निकलती जाती हैं।

चरण 2: चुनाव में बाधा समझना विषयों की इस अधिकता से लेखक का ध्यान कई ओर बँटता है। अनेक संभावनाओं में से किसे ग्रहण करे और किसे छोड़े, यह तय करना उसके लिए कठिन होता है। इसी दुविधा में वह ठीक चुनाव नहीं कर पाता।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक विषय का ठीक चुनाव इसलिए नहीं कर पाता कि उसके सामने विषयों का अत्यधिक भंडार है। नए-नए आकर्षक विकल्पों की बहुलता उसे उलझा देती है।

त्वरित सुझाव: कारण लिखते समय विषयों की अधिकता पर बल दीजिए; विषयों की कमी कहना काव्यांश के कथन के विपरीत होगा।

3(क). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : खेल और युवा [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में प्रस्तावना, विषय का क्रमबद्ध विवेचन और सार्थक उपसंहार होना चाहिए।
- खेल और युवा विषय में स्वास्थ्य, व्यक्तित्व-निर्माण, अवसर तथा संतुलित जीवन के संबंध को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: रूपरेखा और विषय-योजना आरंभ में युवा जीवन में खेलों का महत्त्व बताइए। फिर शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन, अनुशासन और सहयोग के लाभ समझाइए। अंत में खेल-सुविधाओं की आवश्यकता तथा पढ़ाई और खेल में संतुलन का संदेश दीजिए।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध खेल और युवा

युवा किसी भी देश की सबसे बड़ी शक्ति होते हैं। उनकी ऊर्जा को सही दिशा मिले तो समाज प्रगति करता है। खेल इस ऊर्जा के विकास का सशक्त माध्यम हैं। वे केवल मनोरंजन नहीं, स्वस्थ और जिम्मेदार जीवन की तैयारी भी हैं।

नियमित खेल से शरीर चुस्त रहता है, मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं और कार्यक्षमता बढ़ती है। आज लंबे समय तक मोबाइल और कंप्यूटर के सामने बैठने की आदत युवाओं को निष्क्रिय बना रही है। ऐसे में मैदान में खेलना उन्हें सक्रिय जीवन से जोड़ता है। खेल मानसिक तनाव घटाते हैं और प्रसन्नता तथा आत्मविश्वास बढ़ाते हैं।

खेल का मैदान व्यक्तित्व के निर्माण की पाठशाला है। यहाँ समय का पालन, नियमों का सम्मान, निरंतर अभ्यास और लक्ष्य के प्रति समर्पण सीखा जाता है। सामूहिक खेलों में खिलाड़ी सहयोग, नेतृत्व और दूसरों के योगदान का सम्मान करना सीखते हैं। जीत उन्हें विनम्र रहना और हार अपनी कमियाँ सुधारना सिखाती है। ये गुण पढ़ाई तथा भविष्य के कार्यक्षेत्र में भी उपयोगी होते हैं।

खेल प्रतिभाशाली युवाओं के लिए उपलब्धि और रोजगार के अवसर भी खोलते हैं। खिलाड़ी के अतिरिक्त प्रशिक्षक तथा खेल-शिक्षक जैसे कार्यों में भी संभावनाएँ हैं। किंतु खेल को केवल पदक तक सीमित नहीं करना चाहिए। प्रत्येक युवक और युवती को खेल में भाग लेने का अवसर मिलना चाहिए। विद्यालयों में सुरक्षित मैदान, आवश्यक उपकरण और प्रशिक्षकों की व्यवस्था हो। ग्रामीण क्षेत्रों तथा आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की प्रतिभाओं को भी प्रोत्साहन दिया जाए।

अभिभावकों को खेल को समय की बर्बादी मानने के बजाय उसके महत्त्व को समझना चाहिए। युवाओं का कर्तव्य है कि वे पढ़ाई और खेल के लिए नियमित समय बनाएँ तथा अनुचित प्रतिस्पर्धा से बचें। स्वस्थ शरीर, सजग मन और सहयोगी दृष्टि से संपन्न युवा ही देश को आगे ले जाएँगे। इसलिए खेलों को युवा जीवन का अनिवार्य अंग बनाना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष खेल युवाओं को स्वास्थ्य, अनुशासन, सहयोग और संघर्षशीलता देते हैं। शिक्षा के साथ खेलों को उचित स्थान देकर संतुलित व्यक्तित्व और सशक्त समाज का निर्माण किया जा सकता है।

त्वरित सुझाव: निबंध में केवल खेलों की सूची न दें; हर मुख्य अनुच्छेद को युवा जीवन के एक स्पष्ट लाभ या आवश्यकता से जोड़ें।

3(ख). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : हिंदी-भारत का भविष्य [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस निबंध में हिंदी के भविष्य को शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान, प्रौद्योगिकी और रोजगार से जोड़ते हुए समझाना है। केवल भाषा की प्रशंसा करने के स्थान पर उसके विकास की ठोस संभावनाएँ बतानी चाहिए।
- भारत की बहुभाषिकता हमारी शक्ति है। हिंदी की उन्नति का अर्थ अन्य भारतीय भाषाओं की उपेक्षा नहीं, बल्कि उनके साथ संवाद और सहयोग बढ़ाना है।

चरण 1: रूपरेखा और विचार-क्रम प्रस्तावना में हिंदी का सामाजिक महत्त्व रखेंगे। मुख्य भाग में शिक्षा, तकनीक, रोजगार और चुनौतियों की चर्चा होगी। अंत में सरल भाषा, गुणवत्तापूर्ण सामग्री और भाषाई सहयोग पर आधारित भविष्य की दिशा बताएँगे। विचार क्रमबद्ध अनुच्छेदों में रखे जाएँगे और अतिशयोक्तिपूर्ण दावों से बचा जाएगा।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध हिंदी-भारत का भविष्य

भाषा केवल विचार व्यक्त करने का साधन नहीं, समाज की स्मृतियों और आकांक्षाओं की वाहक भी है। हिंदी भारत के बड़े जनसमुदाय को संवाद का साझा आधार देती है। उसका भविष्य इस बात पर निर्भर है कि वह बदलते जीवन की आवश्यकताओं को कितनी प्रभावी ढंग से पूरा करती है।

शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। अपनी समझ की भाषा में पढ़ने से विद्यार्थी विषय को अधिक गहराई से ग्रहण कर सकता है। इसलिए हिंदी में विज्ञान, चिकित्सा, कानून और प्रौद्योगिकी की सरल तथा प्रामाणिक पुस्तकें उपलब्ध होनी चाहिए। अनुवाद उपयोगी है, किंतु मौलिक लेखन और शोध को प्रोत्साहन देना भी आवश्यक है।

डिजिटल तकनीक ने हिंदी के लिए नए अवसर खोले हैं। इंटरनेट, मोबाइल और सामाजिक माध्यमों से हिंदी में जानकारी तथा रचनाएँ दूर तक पहुँच रही हैं। डिजिटल पत्रकारिता, विज्ञापन, अनुवाद, शिक्षण और मनोरंजन के क्षेत्रों में हिंदी का ज्ञान रोजगार के अवसर बढ़ा सकता है। इन अवसरों का लाभ उठाने के लिए भाषा-कौशल के साथ विषय का ज्ञान और तकनीकी दक्षता भी चाहिए।

फिर भी चुनौतियाँ कम नहीं हैं। कठिन शब्दावली, अशुद्ध लेखन और ज्ञान की गुणवत्तापूर्ण सामग्री की कमी पाठकों को दूर कर सकती है। हिंदी को सहज, स्पष्ट और सृजनशील बनाना होगा। विद्यालयों और संस्थानों को भाषा को केवल परीक्षा का विषय समझने की प्रवृत्ति बदलनी चाहिए।

भारत अनेक भाषाओं का देश है। हिंदी की प्रगति अन्य भाषाओं के सम्मान और सहयोग के साथ ही सार्थक होगी। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साहित्य का परस्पर अनुवाद हमारी सांस्कृतिक समझ को समृद्ध करेगा।

हिंदी का भविष्य उज्ज्वल बनाने का दायित्व उसके प्रयोगकर्ताओं पर है। जब वह ज्ञान, संवेदना और आजीविका की प्रभावी भाषा बनेगी, तब भारत के विकास में उसका योगदान और व्यापक होगा।

चरण 3: निष्कर्ष हिंदी का भविष्य उसके सहज प्रयोग, ज्ञान-सामग्री, तकनीकी विस्तार और अन्य भारतीय भाषाओं के साथ सहयोग में निहित है।

त्वरित सुझाव: निबंध में हिंदी की प्रशंसा के साथ शिक्षा, तकनीक और रोजगार के ठोस उदाहरण दें तथा अन्य भारतीय भाषाओं के सम्मान का उल्लेख करें।

3(ग). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : विज्ञान और समाज [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस विषय में विज्ञान की उपलब्धियों को समाज की आवश्यकताओं और समस्याओं से जोड़कर प्रस्तुत करना है। वैज्ञानिक साधनों और उनके उपयोग के परिणामों के बीच संबंध स्पष्ट होना चाहिए।
- संतुलित निबंध लाभों के साथ दुरुपयोग और सामाजिक उत्तरदायित्व पर भी विचार करता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अर्थ प्रमाण, तर्क

और प्रश्न करने की प्रवृत्ति है।

चरण 1: रूपरेखा और विचार-क्रम प्रस्तावना में विज्ञान और सामाजिक जीवन का संबंध बताएँगे। मुख्य भाग में स्वास्थ्य, कृषि, संचार और शिक्षा के लाभ रखेंगे। फिर पर्यावरण, हथियार और असमान पहुँच की चुनौतियाँ समझाकर नैतिक उपयोग तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकता पर समापन करेंगे।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध विज्ञान और समाज

विज्ञान ने मानव जीवन की दिशा और गति दोनों बदली हैं। प्रकृति के नियमों की खोज से प्राप्त ज्ञान जब तकनीक में बदलता है, तब उसका प्रभाव पूरे समाज पर पड़ता है। आज घर, खेत, अस्पताल और विद्यालय तक वैज्ञानिक उपलब्धियों से जुड़े हैं।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में विज्ञान का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। रोगों की जाँच, टीकाकरण, दवाओं और शल्यचिकित्सा की उन्नत विधियों ने अनेक जीवन बचाए हैं। स्वच्छ पेयजल तथा सफाई संबंधी वैज्ञानिक जानकारी ने रोगों की रोकथाम में सहायता की है। कृषि में बेहतर बीज, सिंचाई और मौसम संबंधी सूचनाएँ किसानों के लिए उपयोगी बनी हैं।

संचार और परिवहन ने दूरियों का प्रभाव घटाया है। मोबाइल और इंटरनेट से सूचना शीघ्र मिलती है। विद्यार्थी दूर रहकर भी अध्ययन-सामग्री और विशेषज्ञों तक पहुँच सकते हैं। उद्योगों में मशीनों ने उत्पादन बढ़ाया है और कठिन कार्यों को सरल बनाया है। इस प्रकार विज्ञान समाज की कार्यक्षमता और सुविधा बढ़ाता है।

किन्तु प्रत्येक वैज्ञानिक उपलब्धि अपने आप लोककल्याण नहीं करती। विनाशकारी हथियार मानवता के लिए संकट हैं। अनियंत्रित औद्योगिकीकरण, संसाधनों का अत्यधिक दोहन और इलेक्ट्रॉनिक कचरा पर्यावरण को हानि पहुँचाते हैं। डिजिटल साधनों का असावधान उपयोग निजता के उल्लंघन और गलत सूचना के प्रसार का कारण बन सकता है। तकनीक तक असमान पहुँच सामाजिक विषमता भी बढ़ाती है।

इन समस्याओं का समाधान विज्ञान से विमुख होना नहीं, उसके उपयोग को विवेकपूर्ण बनाना है। सरकार, वैज्ञानिकों, उद्योगों और नागरिकों को मिलकर सुरक्षा, पर्यावरण और जनहित का ध्यान रखना चाहिए। तकनीकी सुविधाएँ गाँवों तथा वंचित वर्गों तक पहुँचनी चाहिए। शिक्षा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना भी आवश्यक है, ताकि लोग अंधविश्वास के स्थान पर प्रमाण और तर्क को स्वीकार करें।

विज्ञान और समाज परस्पर आश्रित हैं। समाज विज्ञान को उद्देश्य देता है और विज्ञान समाज को प्रगति के साधन। संवेदनशीलता तथा नैतिकता से निर्देशित विज्ञान ही मानव जीवन को अधिक स्वस्थ, सुरक्षित और न्यायपूर्ण बना सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष विज्ञान सामाजिक प्रगति का प्रभावी साधन है; उसका वास्तविक लाभ तभी मिलता है जब प्रयोग में जनकल्याण, समान पहुँच और पर्यावरण-सुरक्षा का ध्यान रखा जाए।

त्वरित सुझाव: विज्ञान और समाज पर लिखते समय स्वास्थ्य, कृषि और संचार के उदाहरणों के बाद दुरुपयोग तथा जिम्मेदार प्रयोग का पक्ष अवश्य जोड़ें।

3(घ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : स्त्री शिक्षा और सामाजिक चेतना [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में भूमिका, विषय का क्रमबद्ध विस्तार और सार्थक उपसंहार होता है। स्त्री शिक्षा को आत्मनिर्भरता, समानता और सामाजिक चेतना से जोड़ना चाहिए।
- सामाजिक चेतना का अर्थ अपने अधिकारों और कर्तव्यों को समझना तथा अन्याय, भेदभाव और रूढ़ियों के प्रति सजग होना है।

चरण 1: विषय की रूपरेखा भूमिका में शिक्षा का महत्त्व रखिए। मुख्य भाग में निर्णय क्षमता, परिवार के स्वास्थ्य, बच्चों की शिक्षा, आर्थिक सहभागिता तथा कुरीतियों के विरोध पर चर्चा कीजिए। इसके बाद शिक्षा की बाधाएँ और उपाय बताइए। अंत में समान अवसरों से चेतन समाज बनाने का संदेश दीजिए।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध **स्त्री शिक्षा और सामाजिक चेतना**

शिक्षा मनुष्य को ज्ञान के साथ विवेक और आत्मविश्वास देती है। जिस समाज में स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखा जाता है, उसकी आधी

आबादी अपनी क्षमताओं का पूरा विकास नहीं कर पाती। इसलिए स्त्री शिक्षा केवल व्यक्तिगत उन्नति का साधन नहीं, सामाजिक जागरण की आधारशिला भी है।

शिक्षित स्त्री अपने अधिकारों और दायित्वों को समझती है। वह परिवार में स्वास्थ्य, स्वच्छता, पोषण और बच्चों की पढ़ाई से जुड़े निर्णय अधिक समझदारी से ले सकती है। शिक्षा उसे रोजगार और स्वरोजगार के अवसरों के लिए तैयार करती है। आर्थिक आत्मनिर्भरता से उसका आत्मविश्वास बढ़ता है और परिवार तथा समाज में उसकी भागीदारी सशक्त होती है।

सामाजिक चेतना का विकास तब होता है जब लोग अन्याय को पहचानकर उसके विरुद्ध आवाज उठाते हैं। शिक्षित स्त्रियाँ बालविवाह, दहेज, घरेलू हिंसा तथा लिंगभेद जैसी कुरीतियों का प्रतिरोध कर सकती हैं। वे मतदान, स्थानीय संस्थाओं और सार्वजनिक चर्चाओं में सक्रिय होकर समाज की समस्याओं के समाधान में योगदान देती हैं। उनके विचार अगली पीढ़ी में भी समानता और संवेदनशीलता के संस्कार विकसित करते हैं।

फिर भी गरीबी, असुरक्षित परिवेश, घरेलू काम का बोझ और संकीर्ण सोच अनेक बालिकाओं की पढ़ाई रोक देते हैं। केवल विद्यालय खोलना पर्याप्त नहीं है। सुरक्षित आवागमन, स्वच्छ शौचालय, छात्रवृत्तियाँ, गुणवत्तापूर्ण शिक्षण और परिवार का सहयोग भी आवश्यक हैं। बेटियों को उच्च शिक्षा और अपनी रुचि का व्यवसाय चुनने के अवसर मिलने चाहिए। लड़कों को भी समानता और सम्मान का व्यवहार सिखाना जरूरी है।

स्त्री शिक्षा को परिवार और समाज की साझा जिम्मेदारी माना जाना चाहिए। जब प्रत्येक बालिका निर्भय होकर सीख सकेगी और अपने निर्णय ले सकेगी, तभी सामाजिक चेतना व्यापक होगी। शिक्षित, सम्मानित और आत्मनिर्भर स्त्री एक न्यायपूर्ण तथा प्रगतिशील समाज के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

चरण 3: निष्कर्ष स्त्री शिक्षा आत्मनिर्भरता, समान अधिकारों और सामाजिक कुरीतियों के विरोध की चेतना विकसित करती है। निबंध इन संबंधों को स्पष्ट करते हुए व्यावहारिक उपाय तथा सकारात्मक उपसंहार प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: हर अनुच्छेद में शिक्षा का एक ठोस सामाजिक प्रभाव लिखिए और अंतिम भाग में बालिकाओं की पढ़ाई की बाधाओं का व्यावहारिक समाधान दीजिए।

4. अनियमित विद्युत आपूर्ति के कारण होने वाली असुविधाओं और बिजली चोरी की हो रही घटनाओं की सूचना देते हुए विद्युत विभाग के वितरण प्रबंधक को पत्र लिखिए और सुझाव भी दीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिकायत-पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद और पता, विषय, संबोधन, समस्या का तथ्यपूर्ण विवरण, सुझाव तथा विनम्र समापन आवश्यक हैं।
- समस्या और उसके प्रभाव अलग-अलग स्पष्ट करने चाहिए। बिजली चोरी की सूचना जाँच के अनुरोध के रूप में दी जाए; किसी व्यक्ति पर बिना प्रमाण आरोप नहीं लगाया जाए।

चरण 1: पत्र की योजना वितरण प्रबंधक को संबोधित करते हुए पहले अपने क्षेत्र की अनियमित विद्युत आपूर्ति बताइए। फिर पढ़ाई, जलापूर्ति, व्यापार तथा उपकरणों पर पड़ने वाले प्रभाव लिखिए। बिजली चोरी की घटनाओं की जाँच का अनुरोध कीजिए और नियमित रखरखाव, निगरानी तथा शिकायत-निवारण के उपयोगी सुझाव दीजिए।

चरण 2: पूर्ण आदर्श पत्र 24, शांति विहार
नई दिल्ली
15 जुलाई, 2017
सेवा में,
वितरण प्रबंधक
विद्युत वितरण विभाग
नई दिल्ली

विषय : अनियमित विद्युत आपूर्ति और बिजली चोरी की घटनाओं के संबंध में।

महोदय,

मैं शांति विहार का निवासी हूँ। आपके संज्ञान में लाना चाहता हूँ कि पिछले कई दिनों से हमारे क्षेत्र में विद्युत आपूर्ति अत्यंत अनियमित है। दिन और रात में बार-बार बिना पूर्व सूचना के बिजली चली जाती है। कभी-कभी वोल्टेज में भी अचानक उतार-चढ़ाव होता है। इससे विद्यार्थियों की पढ़ाई बाधित होती है तथा दुकानदारों और छोटे व्यवसायियों का काम प्रभावित होता है। जलापूर्ति के लिए पंप नहीं चल पाते और गर्मी में वृद्धों तथा बीमार व्यक्तियों को विशेष कठिनाई होती है। वोल्टेज के उतार-चढ़ाव से घरेलू विद्युत उपकरणों के खराब होने की आशंका भी बनी रहती है।

क्षेत्र में कुछ स्थानों पर बिजली के तारों से अवैध कनेक्शन लिए जाने की घटनाएँ भी देखने में आई हैं। कृपया विभागीय दल भेजकर इनकी जाँच कराएँ और दोषियों पर नियमानुसार कार्रवाई करें। खुले तथा असुरक्षित तार दुर्घटना का कारण भी बन सकते हैं।

मेरा सुझाव है कि आपूर्ति व्यवस्था, ट्रांसफार्मरों और तारों की नियमित जाँच तथा मरम्मत कराई जाए। निर्धारित कटौती की सूचना पहले दी जाए और शिकायतों के लिए सक्रिय हेल्पलाइन उपलब्ध हो। बिजली चोरी रोकने के लिए नियमित निरीक्षण किया जाए तथा उपभोक्ताओं को सुरक्षित और वैध कनेक्शन लेने के प्रति जागरूक किया जाए।

आशा है कि आप शीघ्र कार्रवाई कर नियमित और सुरक्षित विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय

अमित कुमार

स्थानीय निवासी

चरण 3: निष्कर्ष पत्र में अनियमित आपूर्ति की असुविधाएँ, बिजली चोरी की जाँच का अनुरोध तथा रखरखाव, पूर्व सूचना और निगरानी के सुझाव औपचारिक एवं विनम्र भाषा में प्रस्तुत किए गए हैं।

त्वरित सुझाव: पत्र के मुख्य भाग को समस्या, उसके प्रभाव और सुधार के सुझाव के क्रम में लिखिए; विषय-पंक्ति में विद्युत आपूर्ति तथा बिजली चोरी दोनों का उल्लेख रखिए।

अथवा

4. आपके निकट के चिकित्सालय में उपलब्ध सुविधाओं पर संतोष व्यक्त करते हुए चिकित्सा अधीक्षक को एक पत्र लिखिए तथा उसे और अधिक उपयोगी बनाने के लिए दो सुझाव भी दीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- औपचारिक पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन तथा हस्ताक्षर क्रम से लिखे जाते हैं।
- प्रशंसा तथ्यपूर्ण और सुझाव विनम्र, स्पष्ट तथा व्यावहारिक होने चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और उद्देश्य पत्र चिकित्सा अधीक्षक को संबोधित होगा। विषय में चिकित्सालय की सुविधाओं पर संतोष तथा सुधार के सुझाव का उल्लेख होगा। निजी बातचीत के स्थान पर शिष्ट और संक्षिप्त भाषा रखी जाएगी।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना पहले स्वच्छता, जाँच तथा कर्मचारियों के सहयोग की प्रशंसा करें। फिर दो स्पष्ट सुझाव दें—ऑनलाइन पंजीकरण और शाम की ओपीडी। सुझावों से रोगियों को मिलने वाले लाभ भी बताएँ।

चरण 3: पूरा आदर्श पत्र 24, शांति विहार

नई दिल्ली

20 जुलाई, 2017

सेवा में

चिकित्सा अधीक्षक

राजकीय चिकित्सालय

शांति विहार, नई दिल्ली

विषय : चिकित्सालय की सुविधाओं पर संतोष और सुधार हेतु सुझाव।

महोदय,

मैं आपके चिकित्सालय के निकट रहने वाला नागरिक हूँ। पिछले सप्ताह अपने पिताजी के उपचार के लिए वहाँ आया था। चिकित्सालय की स्वच्छता, व्यवस्थित पंजीकरण और कर्मचारियों के सहयोगपूर्ण व्यवहार से बहुत संतोष हुआ। चिकित्सक ने धैर्यपूर्वक समस्या सुनी तथा आवश्यक जाँचों की जानकारी दी। औषधि-वितरण की व्यवस्था भी संतोषजनक थी। इन सुविधाओं के लिए आप और आपके सहयोगी प्रशंसा के पात्र हैं।

चिकित्सालय को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए मेरे दो सुझाव हैं। पहला, ऑनलाइन पंजीकरण और परामर्श का समय लेने की सुविधा उपलब्ध कराई जाए, जिससे रोगियों को लंबी पंक्तियों में प्रतीक्षा न करनी पड़े। दूसरा, सप्ताह में कुछ दिन शाम की ओपीडी चलाई जाए, ताकि नौकरीपेशा लोग भी समय पर चिकित्सा प्राप्त कर सकें।

आशा है कि आप इन सुझावों पर विचार करेंगे। जनसेवा के आपके प्रयासों के लिए हार्दिक धन्यवाद।

भवदीय

अमित कुमार

स्थानीय निवासी

चरण 4: निष्कर्ष यह पत्र सुविधाओं के प्रति संतोष व्यक्त करते हुए ऑनलाइन पंजीकरण और शाम की ओपीडी के दो व्यावहारिक सुझाव देता है।

त्वरित सुझाव: प्रशंसा के बाद दोनों सुझाव अलग-अलग लिखें और प्रत्येक का रोगियों को होने वाला लाभ बताएँ।

5(क). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'वाचडॉग पत्रकारिता' से क्या आशय है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लोकतंत्र में पत्रकारिता सत्ता और सार्वजनिक संस्थाओं के कार्यों पर निगरानी रखती है।
- जनहित में अनियमितताओं को उजागर करना उसकी पहरेदार भूमिका है।

चरण 1: पहरेदार की भूमिका पहचानें वाचडॉग का आशय पहरेदार से है। पत्रकार सत्ता, प्रशासन तथा अन्य प्रभावशाली संस्थाओं की गतिविधियों पर सजग निगरानी रखता है।

चरण 2: जनहित से संबंध जोड़ें इस निगरानी का उद्देश्य भ्रष्टाचार, अधिकारों के दुरुपयोग और अनियमितताओं को जनता के सामने लाना तथा संबंधित व्यक्तियों की जवाबदेही सुनिश्चित करना है।

चरण 3: निष्कर्ष सत्ता और सार्वजनिक संस्थाओं के कामकाज पर निगरानी रखकर भ्रष्टाचार एवं अनियमितताओं को जनहित में उजागर करने वाली पत्रकारिता को वाचडॉग पत्रकारिता कहते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में निगरानी, अनियमितताओं का खुलासा और जनहित—इन तीन बातों का संबंध स्पष्ट करें।

5(ख). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'फ़ोन इन' क्या है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ोन इन समाचार प्रस्तुति की एक विधि है, जिसमें टेलीफोन से सूचना ली जाती है।
- इसमें स्टूडियो का एंकर संवाददाता या संबंधित व्यक्ति से सीधे बात करता है।

चरण 1: संपर्क की विधि बताएँ जब किसी घटना के बारे में तत्काल जानकारी चाहिए, तब स्टूडियो में उपस्थित समाचार प्रस्तोता टेलीफोन के माध्यम से घटनास्थल पर मौजूद संवाददाता से संपर्क करता है।

चरण 2: प्रस्तुति का स्वरूप स्पष्ट करें संवाददाता फोन पर घटना का विवरण देता है और एंकर के प्रश्नों के उत्तर देता है। इससे दर्शकों को ताजा जानकारी मिलती है; टेलीफोन पर हुई यह बातचीत प्रसारण का हिस्सा बनती है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार प्रस्तुति में एंकर का टेलीफोन द्वारा संवाददाता या संबंधित व्यक्ति से सीधे बातचीत करके घटना की जानकारी लेना फ़ोन इन कहलाता है।

त्वरित सुझाव: फ़ोन इन की पहचान बताते समय टेलीफोन पर सीधी बातचीत और एंकर-संवाददाता का संबंध अवश्य लिखें।

5(ग). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : संपादक का मुख्य कार्य क्या है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक प्रकाशन की सामग्री के चयन और संपादन का उत्तरदायी होता है।
- संपादन में तथ्य, भाषा, स्पष्टता और प्रस्तुति की जाँच की जाती है।

चरण 1: मुख्य दायित्व पहचानें संपादक समाचार-पत्र या पत्रिका में प्रकाशन के लिए उपयुक्त सामग्री का चयन करता है। वह पाठकों की आवश्यकता और प्रकाशन की नीति को ध्यान में रखकर सामग्री का महत्त्व तय करता है।

चरण 2: संपादन की भूमिका बताएँ चुनी हुई सामग्री के तथ्यों, भाषा और प्रस्तुति की जाँच करके उसे शुद्ध, स्पष्ट तथा प्रकाशन योग्य बनाया जाता है। शीर्षक और सामग्री के उचित स्थान के संबंध में भी संपादकीय निर्णय लिए जाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष संपादक का मुख्य कार्य प्रकाशन के लिए उपयुक्त सामग्री का चयन और संपादन करके उसे शुद्ध, स्पष्ट तथा प्रकाशन योग्य बनाना है।

त्वरित सुझाव: मुख्य उत्तर में सामग्री का चयन और उसे प्रकाशन योग्य बनाने की बात साथ लिखें।

5(घ). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'इंट्रो' किसे कहते हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इंट्रो समाचार का आरंभिक अनुच्छेद होता है।
- इसमें घटना की सबसे महत्त्वपूर्ण जानकारी संक्षेप में दी जाती है।

चरण 1: समाचार में स्थान बताएँ समाचार के पहले अनुच्छेद को इंट्रो अथवा मुखड़ा कहते हैं। यह पाठक को आरंभ में ही घटना के मुख्य तथ्य से परिचित कराता है।

चरण 2: उसका कार्य स्पष्ट करें इंट्रो में सबसे महत्त्वपूर्ण सूचना संक्षेप और स्पष्ट रूप में रखी जाती है। इससे पाठक समाचार का सार

समझ लेता है और आगे विवरण पढ़ने की रुचि बनती है। सभी गौण विवरण पहले अनुच्छेद में भरना आवश्यक नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार के उस आरंभिक अनुच्छेद को इंट्रो या मुखड़ा कहते हैं जिसमें घटना की सबसे महत्त्वपूर्ण जानकारी संक्षेप में दी जाती है।

त्वरित सुझाव: इंट्रो की परिभाषा में पहला अनुच्छेद और सबसे महत्त्वपूर्ण सूचना—दोनों अवश्य जोड़ें।

5(ङ). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'प्रिंट मीडिया' के कोई दो लाभ लिखिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रिंट मीडिया में समाचार-पत्र और पत्रिकाओं जैसे मुद्रित माध्यम आते हैं।
- पाठक की सुविधा से पढ़ना और सामग्री को सुरक्षित रखना इसके प्रमुख लाभ हैं।

चरण 1: पढ़ने की स्वतंत्रता बताएँ प्रिंट मीडिया को पाठक अपनी सुविधा के समय और अपनी गति से पढ़ सकता है। कोई अंश समझ में न आए तो उसे दोबारा पढ़ सकता है तथा अपनी रुचि के समाचार का चयन कर सकता है।

चरण 2: संदर्भ की उपयोगिता बताएँ मुद्रित सामग्री को सुरक्षित रखकर भविष्य में संदर्भ के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। उपयोगी लेख या समाचार की कतरन सँभालने से आवश्यकता होने पर जानकारी फिर प्राप्त की जा सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रिंट मीडिया के दो लाभ हैं—इसे अपनी सुविधा और गति से बार-बार पढ़ सकते हैं तथा मुद्रित सामग्री को सुरक्षित रखकर भविष्य में संदर्भ के लिए उपयोग कर सकते हैं।

त्वरित सुझाव: दो लाभ अलग रखें: पहला पढ़ने की सुविधा और दूसरा सामग्री को भविष्य के लिए सुरक्षित रखना।

6. 'बढ़ती आबादी एवं घटती जनसुविधाएँ' विषय पर एक आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में दिए गए सामाजिक विषय का विवेचन तथ्यपूर्ण और क्रमबद्ध भाषा में किया जाता है। शीर्षक, लेखक का नाम, भूमिका, मुख्य चर्चा और निष्कर्ष इसके उपयोगी अंग हैं।
- जनसंख्या और नागरिक सुविधाओं का संतुलन इस विषय का मुख्य विचार है। कारण, प्रभाव और उपायों का संतुलित विवेचन उत्तर को सार्थक बनाता है।

चरण 1: प्रारूप और प्रस्तुति सबसे पहले विषय के अनुकूल शीर्षक और उसके नीचे लेखक का नाम लिखें। भूमिका में मुद्दे का परिचय दें। मुख्य भाग को छोटे अनुच्छेदों में बाँटें और अंत में स्पष्ट, रचनात्मक संदेश रखें। प्रश्न में कोई निश्चित शब्द-सीमा नहीं दी गई है; इसलिए चर्चा विषय पर केंद्रित और अनावश्यक विस्तार से मुक्त होनी चाहिए।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना जनसुविधाओं पर बढ़ती आबादी के दबाव से चर्चा शुरू करें। विद्यालय, अस्पताल, जलापूर्ति और परिवहन पर प्रभाव स्पष्ट करें। पलायन और अपर्याप्त नियोजन को कारणों से जोड़ें। अंत में शिक्षा, परिवार कल्याण, ग्रामीण विकास और बेहतर प्रबंधन के उपाय रखें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श आलेख बढ़ती आबादी एवं घटती जनसुविधाएँ

लेखक: एक जागरूक नागरिक

आज नगरों की भीड़भरी सड़कों, अस्पतालों की लंबी कतारों और पानी के लिए प्रतीक्षा करते लोगों को देखकर एक गंभीर प्रश्न उठता है—क्या हमारी जनसुविधाएँ बढ़ती आबादी की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित हो रही हैं? शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छ जल, आवास

और परिवहन प्रत्येक नागरिक के सम्मानपूर्ण जीवन की बुनियादी जरूरतें हैं। इन पर बढ़ता दबाव हमारे विकास की बड़ी चुनौती है।

जनसंख्या बढ़ने के साथ विद्यालयों में अधिक विद्यार्थियों, अस्पतालों में अधिक रोगियों तथा सड़कों पर अधिक वाहनों के लिए व्यवस्था चाहिए। रोजगार की तलाश में गाँवों से शहरों की ओर पलायन इस दबाव को और बढ़ाता है। जब योजनाएँ वास्तविक जरूरतों से पीछे रह जाती हैं, तो कक्षाओं में भीड़, चिकित्सा में देरी, जलसंकट, यातायात की अव्यवस्था और कचरे के ढेर दिखाई देते हैं। गरीब परिवार इन कठिनाइयों से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं, क्योंकि महँगी निजी सेवाएँ उनकी पहुँच से बाहर होती हैं।

इस समस्या का समाधान केवल नई इमारतें बनाना नहीं है। उपलब्ध सुविधाओं का उचित रखरखाव, संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण और योजनाओं का ईमानदार क्रियान्वयन भी आवश्यक है। ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार, अच्छे विद्यालय और स्वास्थ्य केंद्र विकसित हों तो शहरों की ओर विवश पलायन घट सकता है। शिक्षा, विशेषकर महिला शिक्षा, परिवार कल्याण की जानकारी और जिम्मेदार पारिवारिक निर्णय जनसंख्या स्थिरीकरण में सहायक हैं। नागरिकों को भी पानी बचाने, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करने तथा स्वच्छता बनाए रखने में सहयोग देना चाहिए।

मानव संसाधन तभी शक्ति बनता है जब उसे स्वस्थ और शिक्षित जीवन के अवसर मिलें। इसलिए जनसंख्या की जरूरतों को ध्यान में रखकर दूरदर्शी योजना बनाना और हर व्यक्ति तक मूलभूत सुविधाएँ पहुँचाना सरकार तथा समाज का साझा दायित्व है।

चरण 4: निष्कर्ष प्रस्तुत आलेख में बढ़ती आबादी एवं घटती जनसुविधाएँ विषय का परिचय, उसके प्रमुख सामाजिक पक्ष और सुधार के व्यावहारिक उपाय क्रमबद्ध रूप से दिए गए हैं। अंतिम अनुच्छेद व्यक्तिगत जिम्मेदारी और सामूहिक प्रयास का स्पष्ट संदेश देता है।

त्वरित सुझाव: समस्या के प्रभाव बताते समय शिक्षा, स्वास्थ्य, जल और परिवहन के उदाहरण दें; फिर प्रत्येक के अनुरूप व्यावहारिक समाधान जोड़ें।

अथवा

6. 'स्वच्छ भारत मिशन' विषय पर एक आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में दिए गए सामाजिक विषय का विवेचन तथ्यपूर्ण और क्रमबद्ध भाषा में किया जाता है। शीर्षक, लेखक का नाम, भूमिका, मुख्य चर्चा और निष्कर्ष इसके उपयोगी अंग हैं।
- स्वच्छता में सामाजिक सहभागिता इस विषय का मुख्य विचार है। कारण, प्रभाव और उपायों का संतुलित विवेचन उत्तर को सार्थक बनाता है।

चरण 1: प्रारूप और प्रस्तुति सबसे पहले विषय के अनुकूल शीर्षक और उसके नीचे लेखक का नाम लिखें। भूमिका में मुद्दे का परिचय दें। मुख्य भाग को छोटे अनुच्छेदों में बाँटें और अंत में स्पष्ट, रचनात्मक संदेश रखें। प्रश्न में कोई निश्चित शब्द-सीमा नहीं दी गई है; इसलिए चर्चा विषय पर केंद्रित और अनावश्यक विस्तार से मुक्त होनी चाहिए।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना स्वच्छता को स्वास्थ्य और सम्मान से जोड़कर भूमिका बनाएँ। फिर शौचालयों के उपयोग, कचरा प्रबंधन और सार्वजनिक स्थानों की सफाई पर चर्चा करें। नागरिकों, विद्यालयों और स्थानीय निकायों की भूमिकाएँ बताएँ तथा दैनिक व्यवहार में परिवर्तन का संदेश दें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श आलेख स्वच्छ भारत मिशन

लेखक: एक जागरूक नागरिक

स्वच्छता केवल सुंदर सड़क या चमकते भवन का नाम नहीं है; यह स्वस्थ जीवन, मानवीय गरिमा और जिम्मेदार नागरिकता की पहचान है। स्वच्छ भारत मिशन इसी सोच को जनभागीदारी से जोड़ने का प्रयास है। इसका उद्देश्य खुले में शौच की समस्या दूर करना, स्वच्छता की सुविधाएँ बढ़ाना तथा कचरे के उचित प्रबंधन के प्रति लोगों को जागरूक करना है।

गंदगी से दूषित जल, दुर्गंध और रोग फैलाने वाले कीटों की समस्या बढ़ती है। इसका सबसे अधिक प्रभाव बच्चों, बुजुर्गों और कमजोर वर्गों पर पड़ता है। शौचालयों की उपलब्धता महिलाओं की सुविधा, सुरक्षा और सम्मान से भी जुड़ी है। इसलिए स्वच्छता को व्यक्तिगत पसंद समझकर उपेक्षित नहीं किया जा सकता। यह पूरे समुदाय के स्वास्थ्य का विषय है।

मिशन की सफलता के लिए शौचालय बनवाने के साथ उनका नियमित उपयोग, सफाई और पानी की व्यवस्था आवश्यक है। घरों में गीला और सूखा कचरा अलग किया जाए। जैविक कचरे से खाद बन सकती है और पुनर्चक्रण योग्य सामग्री का उचित उपयोग हो सकता है। गलियों, नालियों और सार्वजनिक स्थलों पर कूड़ा फेंकने की आदत छोड़नी होगी। स्थानीय निकायों को नियमित कचरा संग्रह, सुरक्षित निस्तारण और सफाई कर्मचारियों की सुरक्षा के लिए प्रभावी व्यवस्था करनी चाहिए।

विद्यालय स्वच्छता की आदत विकसित करने के उपयोगी केंद्र बन सकते हैं। बच्चे अपने परिवारों को भी जागरूक कर सकते हैं। बाजारों, कार्यालयों और बस्तियों में सामूहिक प्रयास हों, पर सफाई का दायित्व केवल कर्मचारियों पर न छोड़ा जाए। सार्वजनिक स्थान को भी अपने घर जैसा मानने की चेतना आवश्यक है।

स्वच्छ भारत का सपना केवल अभियान के नारों या तस्वीरों से पूरा नहीं होगा। जब स्वच्छता हमारी दैनिक आदत बनेगी और नागरिक तथा प्रशासन मिलकर निरंतर काम करेंगे, तभी यह मिशन स्वस्थ, सुंदर और सम्मानपूर्ण जीवन का आधार बन सकेगा।

चरण 4: निष्कर्ष प्रस्तुत आलेख में स्वच्छ भारत मिशन विषय का परिचय, उसके प्रमुख सामाजिक पक्ष और सुधार के व्यावहारिक उपाय क्रमबद्ध रूप से दिए गए हैं। अंतिम अनुच्छेद व्यक्तिगत जिम्मेदारी और सामूहिक प्रयास का स्पष्ट संदेश देता है।

त्वरित सुझाव: आलेख में शौचालय, कचरा पृथक्करण और नागरिक भागीदारी को जोड़ें; केवल अभियान का नारा लिखकर उत्तर समाप्त न करें।

7. 'जल ही जीवन है' विषय पर एक फ़ीचर लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर में किसी विषय को तथ्य, संवेदना और जीवन के सजीव चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। उसका शीर्षक आकर्षक और भाषा सहज होती है।
- इस विषय में जल का महत्त्व, जलसंकट के कारण और संरक्षण में व्यक्ति तथा समाज की भूमिका को एक सूत्र में जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: प्रारूप और सामग्री की योजना शीर्षक तथा लेखक का नाम देकर किसी परिचित दृश्य से आरंभ करें। फिर घरेलू जीवन, खेती और प्रकृति में जल की अनिवार्यता स्पष्ट करें। जल की बर्बादी तथा प्रदूषण के उदाहरणों के बाद वर्षाजल संचयन और विवेकपूर्ण उपयोग के उपाय दें। अंत में पाठक को व्यवहार बदलने की प्रेरणा मिले।

चरण 2: पूर्ण आदर्श फ़ीचर जल ही जीवन है: हर बूँद की पुकार

लेखक: एक जागरूक विद्यार्थी

सुबह नल खुलता है और पानी की धार बहने लगती है। हममें से कितने लोग सोचते हैं कि यही धार किसी गाँव में कई किलोमीटर की यात्रा के बाद मिलने वाली राहत है? प्यासे बच्चे के हाथ में रखा पानी का गिलास हमें जल का असली मूल्य समझाता है।

जल केवल प्यास नहीं बुझाता। खेत की हरियाली, भोजन की तैयारी, स्वच्छता और पेड़-पौधों का अस्तित्व उसी पर निर्भर है। नदी सूखती है तो उसके साथ मछुआरे की आजीविका और किसान की उम्मीद भी संकट में पड़ जाती है। प्रकृति के जीवन-चक्र में जल का स्थान कोई दूसरी वस्तु नहीं ले सकती।

फिर भी कहीं खुला नल देर तक बहता रहता है, तो कहीं नदियों में कचरा फेंका जाता है। भूजल का अत्यधिक दोहन और वर्षाजल को व्यर्थ बह जाने देना संकट बढ़ाते हैं। पानी को असीम समझने की आदत हमें भविष्य की कठिनाइयों से बेखबर रखती है।

समाधान हमारे घर से शुरू हो सकता है। टपकते नल ठीक कराएँ, आवश्यकता भर पानी लें और सफाई में अनावश्यक बहाव रोकें। छतों से वर्षाजल इकट्ठा किया जाए तथा तालाबों और कुओं की देखभाल हो। जलस्रोतों में गंदगी न डालना भी उतना ही आवश्यक है। विद्यालय और मोहल्ले मिलकर संरक्षण की आदत विकसित कर सकते हैं।

अगली बार नल बंद करते समय याद रहे कि बचाई गई हर बूँद किसी आने वाले कल की प्यास बुझा सकती है। जल की रक्षा वास्तव में जीवन की रक्षा है।

चरण 3: निष्कर्ष इस फ़ीचर में दैनिक जीवन के दृश्य से जल का महत्त्व उभारा गया है और संकट के साथ व्यावहारिक उपाय जोड़कर पाठक को संरक्षण का संदेश दिया गया है।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर की शुरुआत किसी सजीव दृश्य से करें और अंतिम पंक्ति को उसी विषय के प्रति पाठक की जिम्मेदारी से जोड़ें।

अथवा

7. 'मेरा देश मेरा कर्त्तव्य' विषय पर एक फ़ीचर लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर का उद्देश्य विषय से जुड़ी मानवीय अनुभूति को रोचक, सजीव और विचारपूर्ण भाषा में सामने लाना है। शीर्षक, आरंभ और समापन परस्पर जुड़े होने चाहिए।
- देश के प्रति कर्तव्य को दैनिक नागरिक व्यवहार, सामाजिक सद्भाव और सार्वजनिक हित के ठोस उदाहरणों से स्पष्ट किया जा सकता है।

चरण 1: प्रारूप और विचारों का क्रम आकर्षक शीर्षक और लेखक के नाम के बाद किसी सामान्य नागरिक के काम से आरंभ करें। देशप्रेम को ईमानदार श्रम, कानून-पालन, समानता, स्वच्छता और पर्यावरण की रक्षा से जोड़ें। विद्यार्थियों की भूमिका का उल्लेख करके जिम्मेदार नागरिकता का आह्वान करें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श फ़ीचर मेरा देश, मेरा कर्तव्य: जिम्मेदारी का हर दिन

लेखक: एक जागरूक विद्यार्थी

सुबह सड़क साफ करता सफाईकर्मी, खेत में काम करता किसान और कक्षा में बच्चों को पढ़ाती शिक्षिका—इन सबके काम अलग हैं, पर एक बात समान है। अपने दायित्व को ईमानदारी से निभाते हुए वे देश के जीवन को आगे बढ़ाते हैं। देशप्रेम केवल विशेष अवसरों पर व्यक्त होने वाला उत्साह नहीं; वह रोज के व्यवहार में दिखाई देता है।

देश हमें पहचान, अधिकार और आगे बढ़ने के अवसर देता है। बदले में हमारा कर्तव्य है कि हम दूसरों के अधिकारों का सम्मान करें। सड़क पर यातायात नियम मानना, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना और अपने काम में ईमानदार रहना छोटी बातें लग सकती हैं, किंतु इन्हीं से समाज में विश्वास बनता है।

हमारा देश विविध भाषाओं, धर्मों और संस्कृतियों का घर है। किसी को उसकी भाषा या पहचान के कारण कमतर समझना इस साझे घर को कमजोर करता है। भिन्नताओं के बीच सम्मान और सहयोग बनाए रखना हम सबकी जिम्मेदारी है। जरूरतमंद की सहायता और अन्याय के विरुद्ध संवेदनशीलता भी नागरिक कर्तव्य हैं।

विद्यार्थी भी देश के निर्माण में भाग ले सकते हैं। मन लगाकर पढ़ना, विद्यालय की वस्तुओं को सुरक्षित रखना, पानी और बिजली बचाना तथा आसपास स्वच्छता बनाए रखना उपयोगी शुरुआत है। बिना जाँचे संदेश फैलाने के स्थान पर सत्य की पड़ताल करना और संवाद में शिष्ट रहना भी समाज की सेवा है।

देश की उन्नति का दायित्व किसी एक व्यक्ति पर छोड़कर हम मुक्त नहीं हो सकते। जब प्रत्येक नागरिक अपने हिस्से का काम जिम्मेदारी से करेगा, तभी साझा भविष्य बेहतर बनेगा। मेरा देश मेरा गौरव है; उसकी भलाई के लिए सजग रहना मेरा प्रतिदिन का कर्तव्य है।

चरण 3: निष्कर्ष फ़ीचर देश के प्रति लगाव को रोजमर्रा के दायित्वों से जोड़ता है और विविधता के सम्मान, ईमानदारी तथा सार्वजनिक हित को जिम्मेदार नागरिकता का आधार बताता है।

त्वरित सुझाव: देशप्रेम के सामान्य नारों के स्थान पर तीन-चार ऐसे नागरिक काम लिखें जिन्हें पाठक अपने दैनिक जीवन में अपना सके।

8. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

रुद्ध कोष है, क्षुब्ध तोष
अंगना-अंग से लिपटे भी
आतंक-अंक पर काँप रहे हैं।
धनी, वज्र-गर्जन से बादल!
त्रस्त नयन-मुख ढाँप रहे हैं।
जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर
तुझे बुलाता कृषक अधीर।
ऐ विप्लव के वीर! [8 अंक]

8(क). काव्यांश में शोषकों की किस दशा का वर्णन किया गया है और कैसे? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में बादल की वज्र जैसी गर्जना परिवर्तन और विप्लव की शक्ति का संकेत देती है। धनी शोषक इस परिवर्तन से भयभीत हैं।
- शोषकों की बाहरी संपन्नता और उनके भीतर के आतंक का विरोध उनकी मानसिक दशा स्पष्ट करता है।

चरण 1: शोषकों की दशा पहचानना काव्यांश में धनियों को आतंक से काँपते हुए दिखाया गया है। बादल की प्रचंड गर्जना सुनकर वे त्रस्त हो जाते हैं और आँखें तथा मुँह ढाँप लेते हैं। उनका संचित धन और सुख उन्हें निर्भय नहीं बना पाता।

चरण 2: वर्णन की युक्ति और कारण स्पष्ट करना 'अंगना-अंग से लिपटे भी' और 'आतंक-अंक पर काँप रहे हैं' से स्पष्ट होता है कि सुख-सुविधाओं तथा आत्मीय संगति के बीच भी उनका भय दूर नहीं होता। बादल विप्लव का प्रतीक है; उसकी गर्जना उन्हें अपने शोषण पर टिके प्रभुत्व और संपत्ति के छिनने की आशंका से व्याकुल करती है। काँपने और नयन-मुख ढाँपने की शारीरिक चेष्टाओं से कवि ने उनका आंतरिक आतंक सजीव किया है।

चरण 3: निष्कर्ष शोषक धनी बादल की विप्लवकारी गर्जना से आतंकित, अस्थिर और भयभीत हैं। सुख के बीच काँपने तथा नयन-मुख ढाँपने के चित्रों द्वारा उनकी असुरक्षा व्यक्त हुई है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले भयभीत दशा लिखें, फिर काँपने और नयन-मुख ढाँपने जैसे काव्यांश के दो स्पष्ट संकेत दें।

8(ख). किसानों की स्थिति कैसी और क्यों है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि ने किसान की शारीरिक दुर्बलता के माध्यम से उसकी दयनीय आर्थिक और सामाजिक स्थिति दिखाई है।
- बादल को अधीर होकर पुकारना वर्षा तथा शोषण से मुक्ति लाने वाले परिवर्तन की आशा व्यक्त करता है।

चरण 1: किसान की स्थिति बताना किसान का शरीर दुर्बल, क्षीण और जर्जर हो गया है। 'जीर्ण बाहु' उसकी कमजोर पड़ चुकी भुजाओं और 'शीर्ण शरीर' उसके टूटते स्वास्थ्य का संकेत है। वह अभावग्रस्त तथा पीड़ित है, इसलिए बादल को व्याकुल होकर बुलाता है।

चरण 2: दुर्दशा का कारण और पुकार का आशय कठोर परिश्रम के बावजूद शोषण और अभाव ने किसान को सुख-समृद्धि से वंचित रखा है। धनियों के सुख और किसान के क्षीण शरीर का विरोध इसी विषमता को उभारता है। उसकी खेती वर्षा से जुड़ी है, इसलिए बादल उसके लिए फसल और जीवन की नई आशा भी है। 'ऐ विप्लव के वीर' कहकर वह ऐसे परिवर्तन का आह्वान करता है जो शोषण से मुक्ति दिलाए और उसकी दयनीय स्थिति बदल सके।

चरण 3: निष्कर्ष किसान शोषण, अभाव और कठिन श्रम के कारण दुर्बल तथा दयनीय दशा में है। वह जीवनदायी वर्षा और अपनी स्थिति बदलने वाले विप्लव की आशा से बादल को अधीर होकर पुकारता है।

त्वरित सुझाव: जीर्ण और शीर्ण से शारीरिक दशा समझाएँ; फिर अभाव और शोषण को उसका कारण बताकर बादल से जुड़ी आशा स्पष्ट करें।

8(ग). बादलों को विप्लव के वीर क्यों कहा गया है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में बादल केवल वर्षा करने वाला प्राकृतिक रूप नहीं, सामाजिक परिवर्तन का प्रतीक भी है।
- विप्लव का अर्थ क्रांति है; वीर वह है जो अन्यायपूर्ण व्यवस्था को बदलने का साहस करे।

चरण 1: बादल के प्रभाव को पहचानिए बादल की वज्र जैसी गर्जना से धनी लोग भयभीत होकर आँखें और मुख ढाँप रहे हैं। इसके विपरीत जीर्ण बाहुओं और दुर्बल शरीर वाला कृषक उसे अधीर होकर बुला रहा है। इन विपरीत प्रतिक्रियाओं से स्पष्ट है कि बादल की शक्ति शोषकों के लिए संकट और शोषितों के लिए आशा है।

चरण 2: क्रांति के प्रतीक का अर्थ बताइए बादल की गर्जना अन्यायपूर्ण व्यवस्था को चुनौती देने वाली क्रांति का संकेत है। उसकी वर्षा से कृषक के जीवन और खेतों में नई शक्ति आने की आशा है। इस प्रकार वह धनिकों के आतंक को समाप्त करने तथा पीड़ित किसान को राहत देने वाले परिवर्तन का अग्रदूत है। इसी निर्भीक, परिवर्तनकारी रूप के कारण उसे वीर कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष बादलों को विप्लव के वीर इसलिए कहा गया है कि वे शोषकों को भयभीत करके शोषित कृषकों में आशा जगाने वाली क्रांति और नवजीवन के प्रतीक हैं।

त्वरित सुझाव: धनी के भय और कृषक की पुकार को साथ रखकर बादल की क्रांतिकारी भूमिका स्पष्ट कीजिए।

8(घ). भाव स्पष्ट कीजिए : "अंगना-अंग से लिपटे भी आतंक-अंक पर काँप रहे हैं।" [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पंक्ति का भाव शब्दार्थ के साथ उसके सामाजिक संदर्भ से स्पष्ट होता है।
- अंगना स्त्री का तथा आतंक-अंक भय की गोद का बोध कराता है।

चरण 1: पंक्ति का प्रत्यक्ष अर्थ समझिए धनी लोग अपनी स्त्रियों के शरीर से लिपटे हुए हैं, फिर भी बादल की भयंकर गर्जना सुनकर काँप रहे हैं। प्रियजनों का निकट साथ और सुख-सुविधाओं से भरा जीवन भी उन्हें सुरक्षा का विश्वास नहीं दे पा रहा। कवि उनकी बाहरी संपन्नता के भीतर छिपी असुरक्षा को सामने लाता है।

चरण 2: भीतरी आशय स्पष्ट कीजिए बादल यहाँ क्रांति का प्रतीक है। शोषण से संपत्ति जमा करने वाले धनिकों को आशंका है कि क्रांति आने पर उनका वैभव और प्रभुत्व समाप्त हो जाएगा। इसलिए स्त्रियों के आलिंगन में रहते हुए भी वे मानो आतंक की गोद में बैठे हैं। आनंद के बीच बना यह भय उनके शोषण पर टिके जीवन की अस्थिरता को प्रकट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष भाव यह है कि क्रांति की आशंका से डरे धनिक अपनी स्त्रियों के आलिंगन में भी भयमुक्त नहीं हैं; सुख और वैभव उन्हें काँपने से नहीं बचा पाते।

त्वरित सुझाव: आलिंगन के सुख और क्रांति के भय का विरोध दिखाइए; केवल शब्दार्थ लिखकर उत्तर समाप्त न कीजिए।

अथवा

8. जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास
जब वे दौड़ते हैं बेसुध
छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं
डाल की तरह लचीले वेग से अकसर
छतों के खतरनाक किनारों तक
उस समय गिरने से बचाता है उन्हें
सिर्फ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत
पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ उन्हें थाम लेती हैं
महज एक धागे के सहारे। [8 अंक]

8(क). 'छतों को भी नरम बनाने' का क्या अर्थ है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में बच्चों की गति और उत्साह को कोमलता के बिंबों से व्यक्त किया गया है।
- छतों का नरम होना भावात्मक कथन है, निर्माण-सामग्री में वास्तविक परिवर्तन नहीं।

चरण 1: बच्चों की गति पर ध्यान दीजिए पतंग उड़ाते बच्चे खेल में इतने तल्लीन हैं कि छतों पर बेसुध होकर दौड़ते हैं। उनके शरीर की कोमलता, लचक और हलकेपन से उनका दौड़ना सहज लगता है। कठोर छत भी उनके कोमल पैरों की उत्साहभरी चाप के सामने मानो अपनी कठोरता खो देती है।

चरण 2: कथन का अभिप्राय खोलिए कवि बच्चों की उमंग और निर्भयता का प्रभाव दिखाता है। पतंग के आकर्षण में उन्हें छत की कठोरता या दौड़ने की कठिनाई का अनुभव नहीं होता। उनकी कल्पना और खेल का आनंद कठिन धरातल को भी अनुकूल बना देता है। नरम बनाना इस बालसुलभ जीवंतता का काव्यात्मक चित्र है, यह दावा नहीं कि छत सचमुच मुलायम हो जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष छतों को नरम बनाने का अर्थ है बच्चों के कोमल, लचीले और उत्साहपूर्ण कदमों से कठोर छतों का भी मानो मुलायम और खेल के अनुकूल हो जाना।

त्वरित सुझाव: कठोर छत और बच्चों के कोमल, उत्साही कदमों का संबंध जोड़कर इस कल्पनात्मक कथन का अर्थ लिखिए।

8(ख). 'कपास' शब्द किसका प्रतीक है? उसे जन्म से ही साथ लाना क्या संकेतित कर रहा है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतीक का अर्थ प्रसंग में उसके गुणों से निकाला जाता है; कपास की प्रमुख विशेषताएँ कोमलता और हलकापन हैं।
- जन्म से साथ लाना किसी गुण के स्वाभाविक और जन्मजात होने का संकेत है।

चरण 1: कपास के प्रतीक को पहचानिए यहाँ कपास बच्चों के कोमल, हलके, लचीले और चोट सहकर सँभल जाने वाले शरीर का प्रतीक है। जैसे कपास का स्पर्श मुलायम होता है, वैसे ही बच्चों के शरीर में सहज कोमलता और लचक होती है। इसी बिंब से कवि उनकी फुर्ती और खेल में डूबी बालसुलभ प्रकृति को मूर्त बनाता है।

चरण 2: जन्म से साथ लाने का संकेत बताइए कपास को जन्म से साथ लाने का आशय यह है कि यह कोमलता और लचक बच्चों में स्वाभाविक रूप से मौजूद है। इसे उन्होंने बाहर से प्राप्त नहीं किया। इसी जन्मजात शारीरिक सहजता के सहारे वे दौड़ते, पेंग भरते और उत्साह से पतंग उड़ाते हैं। इसलिए कथन को वास्तविक कपास लेकर पैदा होने के अर्थ में नहीं समझना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष कपास बच्चों की कोमलता, हलकेपन और शारीरिक लचक का प्रतीक है; जन्म से उसे साथ लाना इन विशेषताओं के जन्मजात होने का संकेत देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दोनों हिस्से लिखिए: पहले कपास के गुण, फिर उन गुणों के बच्चों में जन्मजात होने का आशय।

8(ग). दिशाओं को मृदंगों की तरह बजाने से कवि का क्या आशय है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मृदंग लय और ताल उत्पन्न करने वाला वाद्य है; उसका बिंब बच्चों की गतिशीलता को श्रव्य रूप देता है।
- दिशाओं को बजाना बच्चों के चारों ओर फैलती चहल-पहल और आनंद का कल्पनात्मक चित्रण है।

चरण 1: दृश्य में गति और ध्वनि पहचानिए पतंग उड़ाते समय बच्चे छतों पर दौड़ते हैं, उछलते हैं और पूरे उत्साह से इधर-उधर जाते हैं। उनके पैरों की चाप, चहल-पहल और खेल का उल्लास आसपास के वातावरण में फैल जाता है। कवि इस जीवंत गति को मृदंग से निकलती लय और ताल के समान अनुभव करता है।

चरण 2: मृदंग की उपमा का आशय बताइए जिस प्रकार मृदंग की ताल वातावरण को संगीत से भर देती है, उसी प्रकार बच्चों का उत्साह सभी दिशाओं को आनंद और गति से भर देता है। वे अपने खेल में इतने मग्न हैं कि पूरा परिवेश उनकी उमंग के साथ धड़कता हुआ लगता है। दिशाओं का बजना उनके चारों ओर फैलती बालसुलभ सक्रियता का काव्यात्मक संकेत है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि का आशय है कि पतंग उड़ाते बच्चों की दौड़, उछाल और उल्लास से सभी दिशाएँ मृदंग की ताल की तरह लय, चहल-पहल और आनंद से भर उठती हैं।

त्वरित सुझाव: मृदंग की ताल को बच्चों के कदमों की लय से जोड़िए और उस उल्लास के चारों ओर फैलने का प्रभाव बताइए।

8(घ). छतों के किनारों से गिरने से उन्हें कौन बचाता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार काव्यांश की स्पष्ट पंक्तियाँ हैं, विशेषत: रोमांचित शरीर के संगीत का उल्लेख।
- शरीर का संगीत खेल में तल्लीन बच्चे की लय, स्फूर्ति, लचक और संतुलन का बिंब है।

चरण 1: प्रत्यक्ष उत्तर का आधार दीजिए कवि कहता है कि खतरनाक किनारों तक पहुँचने पर बच्चों को गिरने से सिर्फ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत बचाता है। यहाँ शरीर का संगीत किसी बाहर से सुनाई पड़ते गीत का नाम नहीं है। वह उनके उत्साही शरीर की सहज लय और गति के तालमेल को व्यक्त करता है।

चरण 2: पतंग के आकर्षण की भूमिका समझिए पतंग उड़ाने का रोमांच बच्चों में स्फूर्ति और अपने शरीर पर सहज विश्वास भर देता है। उनकी लचक, फुर्ती और संतुलित गति उन्हें सँभालती है। पतंगों की धड़कती ऊँचाइयों का उन्हें थाम लेना इसी गहरी तल्लीनता का काव्यात्मक चित्र है। धागा वास्तव में उनका शारीरिक भार नहीं सँभालता; वह उनके मन को पतंग की ऊँचाई से जोड़े रखता है।

चरण 3: निष्कर्ष छतों के किनारों से गिरने से उन्हें उनके अपने रोमांचित शरीर का संगीत, अर्थात् उत्साह से उत्पन्न लय, फुर्ती और सहज संतुलन बचाता है।

त्वरित सुझाव: पहले काव्यांश के सीधे शब्द लिखिए, फिर शरीर के संगीत को लय और संतुलन के अर्थ में स्पष्ट कीजिए।

9. निम्नलिखित काव्यांश पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी,
हाथों पे झुलाती है उसे गोद भरी।
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी।। [6 अंक]

9(क). काव्यांश का भाव-सौंदर्य लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य में काव्यांश की अनुभूति और उसके प्रभाव को स्पष्ट किया जाता है। यहाँ माँ के स्नेह तथा शिशु के उल्लास का सहज चित्र है।
- माँ की क्रियाएँ और बच्चे की खिलखिलाहट वात्सल्य को मूर्त करती हैं।

चरण 1: माँ के स्नेह का चित्र माँ अपने सुंदर, प्रिय शिशु को गोद में लिए आँगन में खड़ी है। वह उसे हाथों पर झुलाती है और बार-बार हवा में उछालकर खिलाती है। इन सहज घरेलू क्रियाओं में उसका दुलार तथा बच्चे को प्रसन्न करने की इच्छा प्रकट होती है। बच्चे को चाँद का टुकड़ा कहना माँ की दृष्टि में उसके अनुपम सौंदर्य और प्रियता को व्यक्त करता है।

चरण 2: शिशु के आनंद और दृश्य की आत्मीयता माँ के उछालने पर बच्चा खिलखिलाकर हँस पड़ता है। उसकी हँसी से आँगन गूँज उठता है और घर का वातावरण आनंदमय हो जाता है। माँ की ममता तथा बच्चे की निष्कपट प्रसन्नता एक-दूसरे की पूरक हैं। कवि ने साधारण घरेलू दृश्य में निहित मानवीय सौंदर्य को उभारा है; इस चित्र का प्रभाव कोमल, सजीव और हृदयस्पर्शी है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का भाव-सौंदर्य माँ के निश्छल वात्सल्य और शिशु के निर्मल आनंद में है। दोनों के आत्मीय संबंध से पूरा आँगन स्नेह और उल्लास से भर उठता है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य बताते समय माँ की दो क्रियाएँ और बच्चे की हँसी जोड़कर वात्सल्य का प्रभाव स्पष्ट कीजिए।

9(ख). काव्यांश की अलंकार योजना पर प्रकाश डालिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अलंकार पहचानते समय उद्धृत शब्द और उनमें उत्पन्न सौंदर्य दोनों स्पष्ट करने चाहिए।
- रूपक में उपमेय और उपमान का भेद मिटाकर एक को दूसरा कहा जाता है; पुनरुक्तिप्रकाश में शब्द की पुनरावृत्ति प्रभाव बढ़ाती है।

चरण 1: रूपक और पुनरुक्तिप्रकाश 'चाँद के टुकड़े' में बच्चे पर चाँद के टुकड़े का सीधा आरोप है; इसलिए रूपक अलंकार है। बच्चे को चाँद के समान कहने के स्थान पर चाँद का टुकड़ा कहा गया है। इससे शिशु का सौंदर्य, कोमलता और माँ के लिए उसकी अत्यधिक प्रियता प्रकट होती है। 'रह-रह' में एक ही शब्द की पुनरावृत्ति होने से पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है। यह माँ के बार-बार बच्चे को उछालने की क्रिया को प्रभावी बनाता है।

चरण 2: ध्वनि-सौंदर्य 'खिलखिलाते' में 'ख' ध्वनि की आवृत्ति अनुप्रास का सौंदर्य उत्पन्न करती है। साथ ही यह शब्द बच्चे की हँसी को सुनाई पड़ने जैसा बना देता है। इस प्रकार अलंकार केवल सजावट नहीं हैं; वे शिशु की मोहक छवि, माँ की गतिशील क्रिया तथा हँसी की गूँज को सजीव करते हैं। पूरे दृश्य की सहजता बनी रहती है और वात्सल्य का प्रभाव बढ़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष मुख्यत: 'चाँद के टुकड़े' में रूपक, 'रह-रह' में पुनरुक्तिप्रकाश और 'खिलखिलाते' में अनुप्रास का सौंदर्य है। ये अलंकार वात्सल्यपूर्ण दृश्य को प्रभावशाली बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: अलंकार के साथ उसका सटीक शब्द-उदाहरण और दृश्य पर पड़ने वाला प्रभाव अवश्य लिखिए।

9(ग). भाषागत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषागत विशेषताओं में शब्दावली, सहजता, चित्रात्मकता और ध्वनि की भूमिका पर विचार किया जाता है।
- इस काव्यांश की भाषा घरेलू जीवन के अनुरूप सरल, आत्मीय तथा बोलचाल के निकट है।

चरण 1: सरल और लोकप्रचलित शब्दावली 'आँगन', 'हाथों', 'गोद', 'बच्चे' तथा 'हँसी' जैसे परिचित शब्द घरेलू वातावरण रचते हैं। 'पे' का प्रयोग बोलचाल की सहजता देता है और 'लोका देती है' जैसे लोकप्रचलित प्रयोग में बच्चे को उछालकर खिलाने की क्रिया जीवंत होती है। भाषा में कृत्रिम पांडित्य नहीं है; शब्द माँ और बच्चे के दैनिक जीवन से जुड़े हैं।

चरण 2: चित्रात्मकता और ध्वन्यात्मकता 'झुलाती' तथा 'हवा में जो लोका देती है' जैसे क्रियापदों से माँ की गतिविधि का स्पष्ट चित्र बनता है। 'खिलखिलाते' और 'गूँज उठती है' बच्चे की हँसी का श्रव्य बिंब रचते हैं। 'रह-रह' की पुनरावृत्ति से बारंबारता और लय आती है। संक्षिप्त, प्रवाहपूर्ण पंक्तियों में दृश्य और ध्वनि दोनों उपस्थित होते हैं, इसलिए पाठक उस आत्मीय घरेलू क्षण को अनुभव कर पाता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की भाषा सरल, बोलचाल के निकट, लोकप्रयोगों से युक्त, चित्रात्मक और ध्वन्यात्मक है। उसकी सहज लय वात्सल्य की अनुभूति को प्रभावी बनाती है।

त्वरित सुझाव: भाषा की हर विशेषता के साथ काव्यांश से एक शब्द या छोटा प्रयोग जोड़िए।

10(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'छोटा मेरा खेत' कविता में कवि के और किसान के कार्य में समानता किस प्रकार प्रदर्शित की गई है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में कागज का पन्ना खेत का रूपक है। कविता की सृजन-प्रक्रिया को खेती की प्रक्रिया के माध्यम से समझाया गया है।
- कवि और किसान दोनों बीज से आरंभ करके श्रम तथा पोषण द्वारा उपयोगी फल उत्पन्न करते हैं; कविता की फसल का रस बार-बार ग्रहण किया जा सकता है।

चरण 1: खेत और बीज की समानता किसान भूमि में बीज बोता है, जबकि कवि कागज के पन्ने पर अपनी अनुभूति को शब्द देता है। किसी भावनात्मक आवेग से उत्पन्न विचार कविता का बीज बनता है। इसलिए कागज कवि का छोटा खेत है और उसमें बोया गया बीज सृजन की मूल अनुभूति है। बाहरी घटना से मन में उपजी हलचल कवि के भीतर रचना की शुरुआत करती है।

चरण 2: विकास और पोषण की समानता किसान बीज को अनुकूल परिस्थितियाँ देकर पौधे में विकसित करता है। इसी प्रकार कवि कल्पना के सहारे अनुभूति को रूप देता है। बीज की तरह मूल विचार अपना अलग अस्तित्व खोकर रचना में समा जाता है। शब्दों के अंकुर निकलते हैं और भाव पत्तों तथा फूलों की तरह विकसित होते हैं। दोनों कार्यों में धैर्य, लगन और रचनात्मक श्रम आवश्यक है।

चरण 3: फसल और उसके फल की समानता किसान की फसल लोगों की शारीरिक भूख मिटाती है; कवि की रचना रस और संवेदना देकर मानसिक तथा भावात्मक तृप्ति देती है। कविता में रस की फसल पूरी होने पर पाठक उसका आनंद लेते हैं। यहाँ एक विशेषता भी है: अनाज की फसल उपभोग से घटती है, पर कविता का रस बार-बार पढ़ने और अनेक पाठकों तक पहुँचने पर भी समाप्त नहीं होता। इस प्रकार खेती का रूपक साहित्य-सृजन की प्रक्रिया और उसके स्थायी फल को स्पष्ट करता है।

चरण 4: निष्कर्ष कवि का कागज खेत, अनुभूति बीज, कल्पना पोषण, शब्द-भाव अंकुर-पुष्प और कविता रस की फसल है। किसान तथा कवि दोनों सृजन द्वारा जीवन को समृद्ध करते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर का क्रम खेत, बीज, विकास और फसल रखिए; अंत में कविता के अक्षय रस की विशेषता जोड़िए।

10(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'आत्मपरिचय' कविता में "मैं और, और जग और कहाँ का नाता" से कवि की किस मनोदशा का उल्लेख किया गया है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंशराय बच्चन की कविता में कवि का निजी भाव-जगत प्रेम, संवेदना और अपनी अनुभूतियों से बनता है।
- प्रस्तुत पंक्ति कवि के आत्मजगत और संसार की व्यवहारप्रधान दृष्टि के अंतर तथा उसकी स्वतंत्र जीवन-दृष्टि को प्रकट करती है।

चरण 1: कवि और संसार की भिन्न दृष्टि 'मैं और, और जग और कहाँ का नाता' में कवि अपनी मनोवृत्ति को संसार की सामान्य प्रवृत्ति से अलग बताता है। संसार के व्यवहार और मूल्यों से उसका भाव-जगत पूरी तरह मेल नहीं खाता। वह बाहरी मान्यताओं को अपने जीवन का अंतिम आधार नहीं बनाता। उसकी दृष्टि में निजी अनुभूति, प्रेम और हृदय की सच्चाई का अधिक महत्त्व है। इसलिए पंक्ति में अपने अलग अस्तित्व का स्पष्ट बोध है।

चरण 2: अपने स्वप्नों और संवेदनाओं में रमने की वृत्ति कविता में कवि अपने मन का गान करता है और अपने स्वप्नों का संसार बनाता है। वह जगत के द्वंद्वों के बीच भी अपने प्रेमपूर्ण जीवन तथा स्वच्छंद व्यक्तित्व को बनाए रखना चाहता है। उसकी मस्ती केवल लापरवाही नहीं, अपनी भीतरी अनुभूति के अनुसार जीने का आग्रह है। संसार से असहमति के कारण वह अपनी भावना को त्याग नहीं देता।

चरण 3: अलगाव का संतुलित आशय इस कथन का अर्थ यह नहीं है कि कवि के हृदय में मनुष्यों के प्रति प्रेम नहीं है। कविता में वह संसार के प्रति स्नेह भी रखता है, किंतु संसार की सोच और अपनी सोच का अंतर स्वीकारता है। अतः यहाँ संवेदनशील आत्मचेतना, स्वाभिमान और स्वतंत्रता की मनोदशा व्यक्त हुई है। वह बाहरी संसार के दबाव के बावजूद अपने प्रेम, स्वप्न और अंतर्मन के प्रति निष्ठावान रहना चाहता है।

चरण 4: निष्कर्ष पंक्ति में कवि की स्वतंत्र, आत्मचेतस और स्वच्छंद मनोदशा प्रकट है। उसका प्रेम तथा स्वप्नों पर आधारित निजी संसार जगत की व्यवहारप्रधान दृष्टि से भिन्न है।

त्वरित सुझाव: पंक्ति का अर्थ केवल समाज से घृणा न लिखें; निजी भाव-जगत और जगत की सोच का अंतर स्पष्ट करें।

10(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'उषा' कविता में गाँव की सुबह का गतिशील शब्दचित्र कैसे है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शमशेर बहादुर सिंह की कविता में भोर का सौंदर्य क्रमशः बदलते रंगों और घरेलू उपमानों से उभरता है।
- गतिशील शब्दचित्र में दृश्य स्थिर नहीं रहता; अँधेरे से उजाले तक का परिवर्तन अनुभव होता है।

चरण 1: ग्रामीण परिवेश के परिचित उपमान कवि ने सुबह के आकाश को ग्रामीण घर के सहज अनुभवों से जोड़ा है। आरंभ का गहरा नीला आकाश "नीला शंख जैसा है। इसके बाद वह "राख से लीपा हुआ चौका दिखाई देता है, जो "अभी गीला पड़ा है। चौके की नमी और राख की हलकी सफेदी भोर के धुँधले वातावरण का दृश्य उपस्थित करती हैं। फिर आकाश "बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर से धुली हुई जान पड़ता है। सिल, चौका और केसर जैसे उपमान गाँव के घरेलू जीवन की आत्मीयता को प्रकृति से जोड़ते हैं।

चरण 2: बदलते रंगों से गति की पहचान आकाश में पहले नीला, फिर राख जैसा धूसर और उसके बाद केसर की लालिमा फैलती है। कवि को वह स्लेट पर लाल खड़िया चाक मल देने जैसा भी दिखाई देता है। "नील जल में या किसी की गौर झिलमिल देह जैसे हिल रही हो में झिलमिलाहट और हिलने की क्रिया दृश्य को सजीव बनाती हैं। अंत में सूर्योदय होने पर उषा का जादू टूटता है। इस प्रकार कविता किसी एक क्षण का चित्र नहीं देती; रंगों और प्रकाश के निरंतर बदलने से पूरी सुबह आँखों के सामने विकसित होती है।

चरण 3: निष्कर्ष चौका, सिल और खड़िया के ग्रामीण उपमान तथा नीले से लाल होते आकाश का क्रम उषा को गतिशील शब्दचित्र बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: उषा का उत्तर लिखते समय घरेलू उपमानों के साथ रंगों का बदलता क्रम और सूर्योदय अवश्य जोड़िए।

11. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

उस बल को नाम जो दो; पर निश्चय ही वह उस तल की वस्तु नहीं है जहाँ पर संसारी वैभव फलता-फूलता है। वह कुछ अपर जाति का तत्त्व है। लोग स्पिरिचुअल कहते हैं; आत्मिक, धार्मिक, नैतिक कहते हैं। मुझे योग्यता नहीं कि मैं उन शब्दों के अन्तर देखूँ और प्रतिपादन करूँ। मुझे शब्द से सरोकार नहीं। मैं विद्वान नहीं कि शब्दों पर अटकूँ। लेकिन इतना तो है कि तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहाँ उस बल का बीज नहीं है। बल्कि यदि उसी बल को सच्चा बल मानकर बात की जाय तो कहना होगा कि संचय की तृष्णा और वैभव की चाह में व्यक्ति की निर्बलता ही प्रमाणित होती है। निर्बल ही धन की ओर झुकता है। वह अबलता है। वह मनुष्य पर धन की और चेतन पर जड़ की विजय है। [8 अंक]

11(क). गद्यांश में किस बल की बात की गई है? उस बल की विशेषता लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश का केंद्रीय बल आत्मिक या नैतिक बल है, जिसका संबंध संतोष और आत्मसंयम से है।
- उत्तर में बल का नाम और उसकी विशेषता दोनों स्पष्ट करने हैं।

चरण 1: बल का स्वरूप गद्यांश में आत्मिक अथवा नैतिक बल की चर्चा है। लेखक के अनुसार उसे लोग आध्यात्मिक, धार्मिक या नैतिक कह सकते हैं; नाम से अधिक उसका वास्तविक स्वरूप महत्त्वपूर्ण है। यह मनुष्य के भीतर का ऐसा बल है जो उसे धन और सांसारिक वैभव के आकर्षण से ऊपर रखता है। इसलिए इसे केवल आर्थिक संपन्नता या बाहरी अधिकार के अर्थ में नहीं समझना चाहिए।

चरण 2: उसकी प्रमुख विशेषता इस बल की विशेषता यह है कि वह संचय की तृष्णा और धन बटोरने की इच्छा के रहते उत्पन्न नहीं होता। इसका आधार भीतरी संतोष तथा लालच पर नियंत्रण है। लेखक का कथन कि जहाँ बटोर रखने की स्पृहा है वहाँ "उस बल का बीज नहीं है, इसी विशेषता को स्पष्ट करता है। आत्मबल वाला व्यक्ति धन का स्वामी रहता है, उसकी चाह का दास नहीं बनता।

चरण 3: निष्कर्ष यह आत्मिक या नैतिक बल है, जो संतोष और आत्मसंयम से उत्पन्न होकर मनुष्य को धन की तृष्णा से मुक्त रखता है।

त्वरित सुझाव: नाम बताने के बाद गद्यांश की संचय की तृष्णा वाली पंक्ति से आत्मबल की विशेषता स्पष्ट कीजिए।

11(ख). व्यक्ति की निर्बलता कब और कैसे प्रमाणित होती है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न गद्यांश में धन की चाह और आंतरिक दुर्बलता के संबंध को समझने का है।
- उत्तर में निर्बलता प्रकट होने की स्थिति और उसके कारण को अलग स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: निर्बलता कब प्रकट होती है व्यक्ति की निर्बलता तब प्रमाणित होती है जब वह धन का अनावश्यक संचय करने और सांसारिक वैभव पाने की तृष्णा में पड़ जाता है। उसका उद्देश्य आवश्यकताओं की पूर्ति तक सीमित नहीं रहता; वह अधिक से अधिक बटोरकर रखना चाहता है। गद्यांश में "संचय की तृष्णा और वैभव की चाह को ही इस दुर्बलता का प्रमाण बताया गया है।

चरण 2: यह निर्बलता कैसे है लालच के वशीभूत व्यक्ति में अपने मन को नियंत्रित करने का आत्मबल नहीं रहता। वह धन की ओर झुकता है और उसका विवेक तथा स्वतंत्र व्यक्तित्व धन के अधीन हो जाता है। इसलिए बाहरी संपत्ति बढ़ने पर भी उसकी भीतरी शक्ति प्रमाणित नहीं होती। इसके विपरीत, धन पर निर्भरता और उसके आकर्षण को न रोक पाना उसकी मानसिक तथा नैतिक दुर्बलता दिखाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष संचय और वैभव की तृष्णा में पड़कर धन के अधीन हो जाने पर व्यक्ति की निर्बलता सिद्ध होती है।

त्वरित सुझाव: कब के लिए संचय की तृष्णा लिखिए और कैसे के लिए आत्मसंयम खोकर धन के अधीन होना समझाइए।

11(ग). 'अपर जाति का तत्त्व' किसे कहा है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अपर जाति का तत्त्व यहाँ सांसारिक धन से भिन्न स्तर के आत्मिक बल का सूचक है।
- गद्यांश का भाव समझाते समय जाति शब्द का अर्थ श्रेणी या प्रकृति के रूप में ग्रहण करना चाहिए।

चरण 1: तत्त्व की पहचान लेखक ने मनुष्य के आत्मिक अथवा नैतिक बल को "अपर जाति का तत्त्व कहा है। इसका आशय किसी सामाजिक जाति से नहीं, बल्कि एक अलग और उच्चतर प्रकृति की शक्ति से है। लोग उसे आध्यात्मिक, आत्मिक, धार्मिक या नैतिक नाम देते हैं। लेखक इन नामों के सूक्ष्म भेद में न जाकर उस शक्ति के वास्तविक गुण को महत्त्व देता है।

चरण 2: यह अलग तत्त्व क्यों है सांसारिक वैभव धन, संग्रह और बाहरी वस्तुओं से बढ़ता है; यह बल उन पर निर्भर नहीं है। जहाँ संग्रह की तृष्णा और बटोरने की लालसा होती है, वहाँ इसका बीज तक नहीं होता। यह भीतर के संतोष और मन के नियंत्रण का बल है। इसीलिए इसे उस भौतिक धरातल से अलग बताया गया है जहाँ धन और वैभव फलते-फूलते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष आत्मिक या नैतिक बल को अपर जाति का तत्त्व कहा गया है, क्योंकि वह भौतिक संचय के स्तर से भिन्न है और लोभ से मुक्त मन में विकसित होता है।

त्वरित सुझाव: अपर जाति को अलग प्रकृति समझकर उत्तर में आत्मबल और सांसारिक वैभव के आधारों का अंतर दिखाइए।

11(घ). आशय स्पष्ट कीजिए : 'वह मनुष्य पर धन की और चेतन पर जड़ की विजय है।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनुष्य चेतन और विवेकशील है, जबकि धन जड़ साधन है।
- आशय में धन के साधन से स्वामी बन जाने की उलटी स्थिति स्पष्ट करनी है।

चरण 1: मनुष्य और धन का संबंध मनुष्य सोचने, समझने और निर्णय लेने वाला चेतन प्राणी है। धन स्वयं जड़ वस्तु है; उसका उपयोग जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए होना चाहिए। अत: उचित स्थिति में मनुष्य अपने विवेक से धन का उपयोग करता है और धन उसके जीवन का साधन बना रहता है। गद्यांश इसी स्वाभाविक संबंध के उलट जाने की बात कहता है।

चरण 2: कथन का भाव स्पष्ट करना जब व्यक्ति संचय की तृष्णा में पड़कर धन की ओर झुकता है, तब उसके विचार और कार्य धन के आकर्षण से संचालित होने लगते हैं। वह अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण नहीं रख पाता और धन का दास बन जाता है। यही मनुष्य पर धन की तथा चेतन पर जड़ की विजय है। लेखक इसे वास्तविक सामर्थ्य नहीं, आत्मबल और विवेक की पराजय मानता है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि धनलोलुप व्यक्ति अपना विवेक और आत्मसंयम खोकर जड़ धन का दास बन जाता है; यही उसकी निर्बलता है।

त्वरित सुझाव: आशय लिखते समय धन को साधन और मनुष्य को उसका विवेकशील उपयोगकर्ता मानकर उलटे संबंध को समझाइए।

12(क). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए : इंदर सेना से क्या तात्पर्य है? उसे मेंढक मंडली क्यों कहा गया है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- धर्मवीर भारती के संस्मरण में इंदर सेना वर्षा की कामना करने वाली किशोरों की टोली है।

- मेंढक मंडली नाम का संबंध टोली की सामूहिक पुकार, उछल-कूद और पानी मिलने पर उसके व्यवहार से है।

चरण 1: इंदर सेना का परिचय इंदर सेना गाँव के किशोर लड़कों की टोली है। सूखे और वर्षा के अभाव के समय ये लड़के वर्षा के देवता इंद्र से पानी माँगते हुए गली-मुहल्लों में घूमते हैं। उनके शरीर पर प्राय: केवल जाँघिया या लँगोटी होती है और वे कीचड़ तथा धूल से सने रहते हैं। वे "काले मेघा पानी दे जैसी पुकार लगाते हैं। गाँव की स्त्रियाँ उनके ऊपर पानी डालती हैं। यह गतिविधि वर्षा बुलाने के लोकविश्वास से जुड़ी है; इसी कारण टोली को इंद्र की सेना अर्थात इंदर सेना कहते हैं।

चरण 2: मेंढक मंडली कहने का कारण टोली के लड़के मिलकर ऊँची आवाज़ में पानी माँगते और उछलते-कूदते हैं। किसी घर से पानी डाले जाने पर वे भीगकर कीचड़ में लोटते हैं तथा और अधिक शोर मचाते हैं। उनका सामूहिक कोलाहल और पानी पाकर उछलना मेंढकों के टर्राने तथा फुदकने की याद दिलाता है। इसलिए कुछ लोग इस टोली को मेंढक मंडली कहते हैं। इस नाम में उनके शोर और चंचलता पर हलका उपहास है, जबकि इंदर सेना नाम में उसी टोली के प्रति लोकश्रद्धा दिखाई देती है।

चरण 3: निष्कर्ष इंदर सेना वर्षा की प्रार्थना करते हुए घूमने वाले किशोरों की टोली है। मेंढकों जैसी सामूहिक पुकार, उछल-कूद और कीचड़ में लोटने के कारण उसे मेंढक मंडली कहा गया है।

त्वरित सुझाव: पहले टोली का उद्देश्य और गतिविधि बताइए, फिर मेंढकों से मिलते व्यवहार के आधार पर दूसरे नाम का कारण दीजिए।

12(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए : भक्तिन के स्वभाव की ऐसी तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए जिनके कारण उसने लेखिका को अपने अनुसार ढाल लिया। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र की विशेषता का प्रमाण उसके व्यवहार और लेखिका पर पड़े प्रभाव से देना चाहिए।
- भक्तिन का सेवा-भाव आत्मसम्मान, दृढ़ता और अपनेपन से जुड़ा है।

चरण 1: दृढ़ निश्चय और अपनी मान्यताओं पर विश्वास भक्तिन अपने निर्णयों और जीवन की धारणाओं पर अडिग रहती थी। वह दूसरों के कहने से सहज ही अपनी आदतें नहीं बदलती थी। लेखिका उसे पूरी तरह अपने ढंग से नहीं ढाल सकीं; उलटे भक्तिन ने अपने रहन-सहन और भोजन संबंधी आग्रहों से लेखिका की दिनचर्या को प्रभावित किया। उसकी इस दृढ़ता में एक स्वतंत्र व्यक्तित्व की पहचान मिलती है।

चरण 2: अनन्य सेवा और आत्मीय अधिकार भक्तिन ने सेविका के औपचारिक कर्तव्य से आगे बढ़कर लेखिका की सुख-सुविधा को अपना दायित्व माना। उसकी निष्ठा और सच्चे स्नेह ने लेखिका के मन में विश्वास पैदा किया। इस आत्मीयता के कारण लेखिका उसके आग्रहों को केवल आदेश समझकर अस्वीकार नहीं करती थीं, बल्कि उसके अपनेपन का सम्मान करती थीं।

चरण 3: व्यावहारिक चतुराई और तर्कशील आग्रह भक्तिन अपने पक्ष को उचित सिद्ध करने के लिए तर्क निकाल लेती थी। उदाहरण के लिए वह अपने बनाए साधारण देहाती भोजन का महत्त्व स्थापित करती थी। अपने व्यवहार को सही ठहराने की चतुराई और निरंतर आग्रह से उसने लेखिका को अपने भोजन और जीवन के ढंग का अभ्यस्त बना लिया।

चरण 4: निष्कर्ष भक्तिन की दृढ़ता, निष्ठापूर्ण आत्मीय सेवा और अपने पक्ष को मनवाने की व्यावहारिक चतुराई ने लेखिका को उसके अनुसार ढाल दिया।

त्वरित सुझाव: तीन विशेषताएँ लिखते समय प्रत्येक के साथ उसका लेखिका की आदतों या व्यवहार पर प्रभाव भी स्पष्ट कीजिए।

12(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए : उन संघर्षों का उल्लेख कीजिए जिनसे टकराते-टकराते चार्ली चैप्लिन के व्यक्तित्व में निखार आता चला गया। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेख में चार्ली की हास्य-कला का संबंध उनके अभावपूर्ण जीवन और मानवीय करुणा से है।
- संघर्षों का उल्लेख करते हुए उनके व्यक्तित्व और कला पर पड़े प्रभाव को जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: अभावपूर्ण बचपन और परिवार की कठिनाइयाँ चार्ली का बचपन घोर गरीबी, भूख और असुरक्षा में बीता। माँ की बीमारी और परिवार की अस्थिर परिस्थितियों ने उन्हें बहुत छोटी उम्र में जीवन की कठोर वास्तविकताओं से परिचित करा दिया। सुख-सुविधाओं से वंचित इस जीवन ने उन्हें समाज के उपेक्षित लोगों की पीड़ा पहचानना सिखाया। वे गरीब और असहाय व्यक्ति की बेबसी को बाहर से देखने वाले कलाकार नहीं रहे।

चरण 2: अपमान, उपेक्षा और जीविका का संघर्ष जीवनयापन की चिंता और साधारण मनुष्य को झेलनी पड़ने वाली तिरस्कारपूर्ण स्थितियों से वे लगातार जूझे। उन्होंने देखा कि मनुष्य अपनी गरिमा बचाने का प्रयत्न करता है, फिर भी परिस्थितियाँ उसे हास्यास्पद बना देती हैं। इसी अनुभव से उनके पात्र में दुर्बलता के साथ जिजीविषा और बार-बार उठ खड़े होने का साहस आया।

चरण 3: संघर्ष का संवेदना और कला में रूपांतरण चार्ली ने अपने दुख को केवल निजी शिकायत नहीं बनने दिया। उन्होंने करुणा और हास्य को साथ रखकर ऐसी कला विकसित की जिसमें दर्शक हँसते हुए साधारण मनुष्य की पीड़ा भी महसूस करता है। अभाव और अपमान से टकराने पर उनमें मनुष्यता, आत्मपरिहास और जीवन के प्रति जिद निखरती गई; यही उनकी व्यापक लोकप्रियता का आधार बनी।

चरण 4: निष्कर्ष गरीबी, भूख, पारिवारिक संकट और सामाजिक उपेक्षा ने चार्ली को संवेदनशील तथा जुझारू बनाया। इन्हीं अनुभवों से उनकी कला में हँसी के भीतर करुणा और मानवीय गरिमा उभरी।

त्वरित सुझाव: संघर्षों की सूची देने के बाद बताइए कि उनसे चार्ली की संवेदना, जिजीविषा और हास्य-कला कैसे विकसित हुई।

12(घ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'नमक' कहानी में क्या संदेश छिपा हुआ है? अपने शब्दों में लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में नमक अपनी जन्मभूमि की स्मृति और आत्मीय संबंधों का प्रतीक है।
- कहानी का संदेश सोद्देश्य घटनाओं तथा पात्रों की संवेदना से स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: विभाजन के बाद भी जीवित अपनापन कहानी बताती है कि राजनीतिक सीमाएँ बन जाने से लोगों की स्मृतियाँ और हृदय के रिश्ते समाप्त नहीं होते। अपने पुराने शहर और मिट्टी से व्यक्ति का जुड़ाव बना रहता है। सिख बीबी का लाहौर का नमक मँगाना केवल खाने की वस्तु की माँग नहीं है; उसमें अपने छूटे हुए वतन की स्मृति और उसके प्रति गहरा प्रेम छिपा है।

चरण 2: मानवीय संवेदना का सीमाओं से बड़ा होना सफ़िया नमक लाकर उस आत्मीय इच्छा को पूरा करना चाहती है। सीमा पर मिलने वाले अधिकारियों के व्यवहार में भी अपनी जन्मभूमि के प्रति लगाव दिखाई देता है। अलग-अलग देशों में रहने पर भी वे बिछुड़ने के दर्द को समझते हैं। यह प्रसंग दिखाता है कि प्रशासनिक नियमों के बीच भी मनुष्य की संवेदना दूसरे मनुष्य की भावना से जुड़ सकती है।

चरण 3: सद्भाव और साझा संस्कृति का आग्रह नमक जैसी छोटी वस्तु कथा में साझा जीवन, अपनत्व और विश्वास का बड़ा अर्थ ग्रहण करती है। धर्म और राष्ट्रीयता के भेद को आधार बनाकर मनुष्यों को शत्रु मानना उचित नहीं है। कहानी हमें प्रेम, सहानुभूति और सांस्कृतिक संबंधों को बचाने की प्रेरणा देती है। बँटवारे की कटुता से ऊपर उठकर दूसरे के दुख और लगाव का आदर करना ही इसका मानवीय आग्रह है।

चरण 4: निष्कर्ष नमक कहानी का संदेश है कि सरहदें मनुष्यों के प्रेम, स्मृतियों और साझा संस्कृति को नहीं बाँट सकतीं। मानवीय

आत्मीयता तथा सद्भाव राजनीतिक और धार्मिक विभेदों से अधिक स्थायी हैं।

त्वरित सुझाव: लाहौर के नमक की माँग को जन्मभूमि की स्मृति से जोड़कर फिर कहानी का व्यापक मानवीय संदेश लिखिए।

12(ङ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए : हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी-कभी बहुत आवश्यक हो जाती है। 'शिरीष' पाठ के आधार पर समझाइए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पाठ में शिरीष प्रकृति के माध्यम से जीवन का संतुलन सिखाता है।
- बाहरी दृढ़ता और भीतर की संवेदनशीलता एक-दूसरे की पूरक हो सकती हैं।

चरण 1: शिरीष में कोमलता और कठोरता का सहअस्तित्व शिरीष के फूल अत्यंत कोमल और सुंदर हैं, जबकि उसके फल मजबूत होते हैं। फूलों और फलों का यह भेद दिखाता है कि प्रकृति में कोमलता के साथ कठोरता का भी स्थान है। केवल बाहरी रूप देखकर पूरे स्वभाव का निर्णय नहीं करना चाहिए। लेखक इसी प्राकृतिक विशेषता से मानव जीवन के लिए एक व्यावहारिक सीख ग्रहण करते हैं।

चरण 2: प्रतिकूल परिस्थितियों के सामने दृढ़ता मनुष्य को जीवन में आघात, अन्याय और कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। यदि वह हर दबाव के सामने झुक जाए, तो उसकी आत्मीयता और संवेदना भी सुरक्षित नहीं रह पाएगी। इसलिए कभी-कभी व्यवहार में दृढ़ होना और अनुचित आग्रह का प्रतिरोध करना आवश्यक होता है। यह कठोरता क्रूरता या दूसरे को दुख पहुँचाने की इच्छा नहीं, बल्कि अपने मानवीय मूल्यों की रक्षा का उपाय है।

चरण 3: भीतर की कोमलता को बनाए रखने का अर्थ हृदय की कोमलता का अर्थ दूसरों के दुख को समझना, प्रेम करना और संवेदनशील बने रहना है। उसे बचाने के लिए बाहर की परिस्थितियों के प्रति विवेकपूर्ण कठोरता अपनानी पड़ सकती है। शिरीष की तरह मनुष्य को कठिन वातावरण में भी अपना सरस स्वभाव बचाए रखना चाहिए। दृढ़ व्यवहार तभी सार्थक है जब वह भीतर की करुणा और सहृदयता को नष्ट करने के बजाय उनकी रक्षा करे।

चरण 4: निष्कर्ष शिरीष के कोमल फूल और कठोर फल सिखाते हैं कि संवेदनशील हृदय की रक्षा के लिए व्यवहार में आवश्यक दृढ़ता रखनी चाहिए। कोमलता और विवेकपूर्ण कठोरता का संतुलन जीवन को समर्थ बनाता है।

त्वरित सुझाव: कोमल फूल और कठोर फल का उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए कि आवश्यक दृढ़ता का उद्देश्य संवेदना की रक्षा है।

13. नवयुवकों के लिए विशेष उपयोगी जीवन-मूल्यों की दृष्टि से 'जूझ' कहानी की विवेचना कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव की आत्मकथात्मक रचना 'जूझ' में प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच शिक्षा प्राप्त करने और अपनी रचनात्मक क्षमता पहचानने का संघर्ष है।
- परिश्रम, धैर्य, शिक्षा के प्रति निष्ठा और उचित मार्गदर्शन का महत्त्व इसके प्रमुख जीवन-मूल्य हैं।

चरण 1: शिक्षा को जीवन की दिशा बनाना कथानायक खेती के काम में लगा दिया जाता है, पर उसका मन पढ़ने में रमता है। उसे लगता है कि शिक्षा उसके जीवन को नई दिशा दे सकती है। पिता की असहमति और घर की कठिन परिस्थितियों के बावजूद उसकी पढ़ने की इच्छा समाप्त नहीं होती। यह प्रसंग नवयुवकों को सिखाता है कि अपने भविष्य के प्रति सजग रहना और सार्थक लक्ष्य बनाना आवश्यक है। परिस्थितियों को भाग्य मानकर स्वीकार कर लेना विकास का मार्ग बंद कर देता है।

चरण 2: परिश्रम और उत्तरदायित्व का समन्वय दत्ता जी राव की सहायता से विद्यालय जाने का अवसर मिलने पर भी कथानायक का संघर्ष समाप्त नहीं होता। उसे खेती के काम और पढ़ाई दोनों सँभालने पड़ते हैं। वह कठिन दिनचर्या के बीच अपने उद्देश्य पर टिके रहने का

प्रयत्न करता है। इससे स्पष्ट होता है कि सफलता केवल इच्छा करने से नहीं मिलती; उसके लिए समय का उपयोग, श्रम और निरंतरता चाहिए। नवयुवक इससे अपने दायित्वों से भागे बिना प्रगति करने की प्रेरणा ले सकते हैं।

चरण 3: अपमान के बीच आत्मविश्वास विद्यालय में आरंभिक संकोच और सहपाठियों के उपहास से उसे कठिनाई होती है, फिर भी वह पढ़ाई नहीं छोड़ता। धीरे-धीरे अध्ययन और अपने आचरण से वह कक्षा में स्थान बनाता है। यह अनुभव बताता है कि दूसरों की हँसी को अपनी योग्यता का अंतिम निर्णय नहीं मानना चाहिए। आत्मसम्मान का अर्थ क्रोध में अवसर गँवाना नहीं, बल्कि अपनी क्षमता को विकसित करना है।

चरण 4: गुरु की प्रेरणा से सृजनशीलता न. वा. सौंदलगेकर मास्टर का भावपूर्ण कविता-पाठ कथानायक को विशेष रूप से प्रभावित करता है। वह कविता की लय, भाव और सौंदर्य का अनुभव करता है तथा स्वयं कविता रचने लगता है। अध्यापक के प्रोत्साहन से उसकी प्रतिभा को दिशा मिलती है। यह प्रसंग युवाओं को अच्छे मार्गदर्शक का सम्मान करने, साहित्य से संवेदनशीलता प्राप्त करने और अपनी रुचि को अभ्यास से निखारने की सीख देता है।

चरण 5: निष्कर्ष इस प्रकार 'जूझ' नवयुवकों को शिक्षा के प्रति लगन, संघर्षशीलता, श्रम, आत्मविश्वास तथा सृजनशीलता के जीवन-मूल्य देती है। कथानायक का विकास दिखाता है कि दृढ़ संकल्प और सही मार्गदर्शन से कठिन परिस्थितियों के बीच भी व्यक्तित्व का निर्माण किया जा सकता है।

त्वरित सुझाव: प्रत्येक जीवन-मूल्य के साथ कथानायक के जीवन का संबंधित प्रसंग जोड़ें; केवल गुणों की सूची न लिखें।

14(क). 'आधुनिकता' के प्रति यशोधर पंत और उसकी पत्नी के दृष्टिकोण का अंतर सोदाहरण समझाइए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी 'सिल्वर वैडिंग' में यशोधर पंत और उनके परिवार के माध्यम से बदलती जीवन-शैली और पीढ़ियों के अंतर को चित्रित किया गया है।
- यशोधर पंत परंपरा और सादगी से जुड़े हैं; उनकी पत्नी समय और बच्चों के साथ सामंजस्य स्थापित कर लेती है।

चरण 1: यशोधर पंत की परंपराप्रियता यशोधर पंत आधुनिक जीवन के दिखावे और नए तौर-तरीकों को सहज स्वीकार नहीं कर पाते। किशन दा के संस्कारों का उनके जीवन पर गहरा प्रभाव है। वे सादगी, पुराने सामाजिक संबंधों और अपनी सांस्कृतिक परंपराओं को महत्त्व देते हैं। बच्चों की आधुनिक जीवन-शैली उन्हें अपने परिचित जीवन से दूर जाती हुई लगती है। इसलिए उनकी प्रतिक्रिया में संकोच, असहमति और अपने मूल्यों के छूटने की चिंता दिखाई देती है।

चरण 2: वैवाहिक वर्षगाँठ के आयोजन का उदाहरण बच्चे माता-पिता के विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर आधुनिक ढंग से उत्सव आयोजित करते हैं। यशोधर पंत को इस प्रकार 'सिल्वर वैडिंग' मनाना और उससे जुड़ा समारोह सहज नहीं लगता। वे इस अवसर को बच्चों की तरह उत्साहपूर्वक नहीं अपना पाते। आयोजन में उनकी असहजता बताती है कि उनके लिए दांपत्य की आत्मीयता का संबंध सार्वजनिक प्रदर्शन से नहीं है। पत्नी बच्चों की खुशी में सम्मिलित होती है और आयोजन को अपनाती है।

चरण 3: पत्नी की परिवर्तन स्वीकार करने की क्षमता यशोधर पंत की पत्नी भी उसी पुरानी पारिवारिक पृष्ठभूमि से आती है, लेकिन बच्चों के बड़े होने पर उसने नए वातावरण से मेल बिठा लिया है। पहनावे और रहन-सहन में आए बदलाव उसे पति जितना परेशान नहीं करते। पति जिस आधुनिकता को अपने संस्कारों के विरुद्ध समझते हैं, पत्नी उसे बच्चों के जीवन और समय के परिवर्तन के रूप में स्वीकार कर लेती है। इससे वह बच्चों के अधिक निकट दिखाई देती है।

चरण 4: दोनों दृष्टिकोणों का अंतर यशोधर पंत की दृष्टि में अतीत के अनुभव जीवन के आचरण की कसौटी बने हुए हैं। पत्नी की दृष्टि अधिक व्यावहारिक और अनुकूलनशील है। वह पति के पुराने संस्कारों की पृष्ठभूमि से निकलकर बच्चों की इच्छाओं के साथ चलती है। इस अंतर के कारण यशोधर पंत परिवार के बीच भी अकेलापन अनुभव करते हैं, जबकि पत्नी नई पीढ़ी के उत्साह में भागीदार बन जाती है। कहानी इस स्थिति को पारिवारिक संबंधों में आए बदलाव के रूप में प्रस्तुत करती है।

चरण 5: निष्कर्ष अतः यशोधर पंत आधुनिकता के प्रति संशयशील और परंपरानिष्ठ हैं, जबकि उनकी पत्नी परिवर्तन के प्रति अधिक सहज तथा व्यावहारिक है। वर्षगाँठ का आयोजन और बच्चों की जीवन-शैली के प्रति दोनों की प्रतिक्रियाएँ इस अंतर को स्पष्ट करती हैं।

त्वरित सुझाव: तुलनात्मक उत्तर में एक ही प्रसंग पर पति और पत्नी की अलग प्रतिक्रिया दिखाएँ; सिल्वर वैडिंग का आयोजन मुख्य उदाहरण है।

14(ख). महायुद्ध की विभीषिका के संदर्भ में ऐन फ्रैंक की डायरी को जीवंत दस्तावेज़ क्यों माना जाता है? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन फ्रैंक की डायरी द्वितीय महायुद्ध के दौरान नाज़ी उत्पीड़न झेलते एक यहूदी परिवार के जीवन का प्रत्यक्ष मानवीय साक्ष्य है। इसमें इतिहास की घटनाएँ एक किशोरी के दैनिक अनुभवों से जुड़ जाती हैं।
- जीवंत दस्तावेज़ वह रचना है जो किसी युग की स्थितियों के साथ मनुष्य के भय, आशा, संबंधों और संघर्ष को भी विश्वसनीय रूप में सामने लाती है।

चरण 1: युद्ध और यहूदी उत्पीड़न का प्रत्यक्ष अनुभव ऐन फ्रैंक युद्ध की दूर बैठी दर्शक नहीं थी। नाज़ियों की यहूदी विरोधी नीति के कारण उसके परिवार को अपनी रक्षा के लिए छिपकर रहना पड़ा। डायरी में दर्ज उसके अनुभव बताते हैं कि युद्ध केवल सीमाओं पर लड़ने वाले सैनिकों तक सीमित नहीं रहता; वह निर्दोष नागरिकों की स्वतंत्रता, सुरक्षा और सामान्य दिनचर्या तक छीन लेता है। इस प्रकार यह रचना महायुद्ध के नागरिक जीवन पर पड़े प्रभाव का सजीव प्रमाण है।

चरण 2: छिपे हुए जीवन की घुटन और भय गुप्त आवास में रहने वालों के लिए छोटी-सी असावधानी भी पकड़े जाने का कारण बन सकती थी। बाहर जाने की स्वतंत्रता का अभाव, आवश्यक वस्तुओं की कमी, समाचारों की चिंता और हर समय खोज लिए जाने की आशंका उनके जीवन को तनावपूर्ण बनाते थे। ऐन इन परिस्थितियों के साथ वहाँ रहने वाले लोगों के व्यवहार और आपसी खींचतान को भी लिखती है। इन बारीक विवरणों से पाठक युद्ध की विभीषिका को केवल समझता ही नहीं, उसकी मानसिक यातना भी महसूस करता है।

चरण 3: किशोरी के अंतर्मन की विश्वसनीय अभिव्यक्ति डायरी में ऐन के अकेलेपन, माता-पिता से संबंधों, आत्मसम्मान, स्नेह की चाह और भविष्य के सपनों की अभिव्यक्ति मिलती है। भयावह परिस्थितियों में भी उसका मन सोचता, प्रश्न करता और बेहतर जीवन की आशा रखता है। यही निजी अनुभूतियाँ उसे एक गुमनाम युद्ध पीड़ित के स्थान पर संवेदनशील, जीवित व्यक्तित्व के रूप में सामने लाती हैं। उसका व्यक्तिगत दुख उस समय के असंख्य निर्दोष लोगों की पीड़ा का प्रतिनिधि बन जाता है।

चरण 4: ऐतिहासिक साक्ष्य और मानवीय चेतावनी ये टिप्पणियाँ घटनाओं के बीच लिखी गई थीं, इसलिए इनमें तत्काल अनुभव की आत्मीयता और प्रामाणिकता है। डायरी नाज़ी अमानवीयता तथा नस्लीय घृणा के परिणाम उजागर करती है और साथ ही मानवता, शांति तथा स्वतंत्रता का मूल्य समझाती है। इसलिए इसका महत्त्व केवल घटनाओं की सूचना देने में नहीं, युद्ध के पीछे छिपी मनुष्यों की त्रासदी को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने में भी है।

चरण 5: निष्कर्ष ऐन फ्रैंक की डायरी में महायुद्ध की विभीषिका प्रत्यक्ष अनुभवों, छिपे जीवन के भय और एक किशोरी की संवेदनाओं के माध्यम से सामने आती है। ऐतिहासिक सत्य तथा मानवीय अनुभूति का यह मेल उसे युद्धकाल का जीवंत दस्तावेज़ बनाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में युद्ध की सामान्य निंदा तक सीमित न रहें; गुप्त आवास का जीवन, यहूदी उत्पीड़न और ऐन के अंतर्मन को जीवंत दस्तावेज़ होने के तर्क से जोड़ें।